।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/–
आजीवन : 1100/–
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
डाक पंजीकरण संख्या-
UP MRD Dn-64/2018-20
दयानन्दाब्द १९५
मानव सृष्टि सं.- १९६०८५३११९
सृष्टि सं.- १९७२९४९११९

वर्ष–17 | अंक–7 | आषाण शु. 4 से श्रावण कृ. 3 | सं. 2075 वि. | 16 से 31 जुलाई 2018 | अमरोहा, उ.प्र. | पृ. 16 | प्रति–5/–

२५ अक्टूबर से दिल्ली में होगा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में 'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन–2018 दिल्ली' का भव्य आयोजन दिल्ली के स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी में दिनांक 25–26–27 एवं 28 अक्टूबर, 2018 तक किया जा रहा है। देश सहित सारे आर्यजगत में इसकी तैयारियां आरम्भ हो चुकी हैं। वर्ष 2012 के दिल्ली महासम्मेलन के उपरान्त दक्षिणी अफ्रीका, सिंगापुर–थाईलैंड, आस्ट्रेलिया, नेपाल एवं बर्मा में सफल आयोजनों के पश्चात् दिल्ली में पुनः इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

आयोजन समिति ने आर्यजनों से अपील की है कि अपनी–अपनी आर्यसमाज के समस्त अधिकारियों, सदस्यों के परिवार एवं विशेषकर युवाओं सहित अधिक से अधिक संख्या में पहुंचने के लिए आर्यजनों को प्रेरित करें। साथ ही, आपके आर्यसमाज की ओर से कितने आर्यजन महासम्मेलन में पहुंचेंगे, इसकी सूचना भी यथाशीघ्र सम्मेलन कार्यालय– दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001 को भेजें।

सभा द्वारा जारी विज्ञप्ति में कहा गया है कि वे आर्य महानुभाव जिनके बच्चे विदेशों में कार्यरत् हैं, उन्हें विभिन्न माध्यमों से सम्मेलन की सूचना अवश्य दें तथा यदि वे इस वर्ष भारत आने का कार्यक्रम बना रहे हैं तो उनसे सम्मेलन की तिथियों में अपना कार्यक्रम बनाने को कहें, जिससे वे इस महा सम्मेलन में भी सम्मिलित हो सकें।

इस सम्मेलन को भव्य बनाने के लिए अपने आर्य समाज की ओर से प्रभात फेरियों का आयोजन करें तथा सम्मेलन में अधिकाधिक संख्या में पहुंचने के लिए लोगों को प्रेरित करें। साथ ही इसके प्रचार–प्रसार हेतु आर्यसमाज के बाहर तथा मुख्य मार्गों तथा चौराहों पर सम्मेलन के होर्डिंग्स बनवाकर लगवाएं तथा प्रचार सामग्री भी प्रकाशित करवाएं। लोगो, होर्डिंग्स, पोस्टर, पेम्फलेट आदि प्रचार सामग्री प्रान्तीय सम्मेलन कार्यालय अथवा केन्द्रीय सम्मेलन कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है तथा www.aryamahasammelan.org तथा www.thearyasamaj.org से डाउनलोड भी की जा सकती है।

वयोवृद्धों का होगा सम्मान

आर्य महासम्मेलन में समिति द्वारा ऐसे आर्यजनों का, जो 80 वर्ष से अधिक आयु के हों, तथा जिन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज के प्रचार–प्रसार को समर्पित किया हो, अथवा विशेष योगदान दिया हो, का विशेष सम्मान किये जाने की योजना है। ऐसे आर्यजनों का पूर्ण विवरण लिखकर केन्द्रीय आयोजन समिति को भेजें, जिससे उनके नामों पर समिति विचार कर सके।

युवा कार्यकर्ता भी होंगे महासम्मेलन में सम्मानित

महासम्मेलन में युवा कार्यकर्ता/ महिला कार्यकर्ता, जिन्होंने आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में अत्यंत उल्लेखनीय कार्य किया हो, को भी सम्मानित किया जाएगा। आयोजन समिति द्वारा ऐसे नामों के भी पूर्ण विवरण सहित प्रस्ताव आमंत्रित किये गये हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के महत्वपूर्ण सम्पर्क सूत्र

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष– स्वागत समिति।

सुरेश चन्द्र आर्य
प्रधान– सार्वदेशिक सभा (09824072509)

प्रकाश आर्य :
मंत्री– सार्वदेशिक सभा (09826655117)

धर्मपाल आर्य :
महासम्मेलन संयोजक (09810061763)

विनय आर्य, महामंत्री– दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (9958174441)

महासम्मेलन- स्मारिका का भव्य प्रकाशन

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन– 2018 के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका हेतु वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों से निवेदन है कि वे अर्य समाज के अनछुए विषयों, समसामयिक विषयों एवं आर्य जगत की महान विभूतियों आदि से संबन्धित महत्वपूर्ण लेख भेजें।

यदि आप अपना कोई विज्ञापन, अपनी संस्था/ आर्य समाज/ अपने परिवार के संबन्ध में सामग्री प्रकाशित करवाना चाहते हैं, तो आप विज्ञापन के रूप में अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि और कार्य का परिचय दे सकते हैं।

संपर्क : संयोजक स्मारिका, 15 हनुमान रोड,नई दिल्ली–110001, ईमेल : aryasabha@yahoo.com

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव ६ से

उदयपुर। राजस्थान प्रान्त की अत्यन्त मनोरम नगरी उदयपुर जहां नवलखा महल में बैठकर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की, में 6 से 8 अक्टूबर 2018 तक 21वें सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का भव्य आयोजन किया जायेगा।

ज्ञातव्य है कि 1992 में यह महल आर्यसमाज को हस्तगत किया गया था। निरन्तर पुरुषार्थ व जनता के सहयोग व स्नेह से अब यह एक सुन्दर स्मारक बन गया है जहां प्रतिवर्ष 30 हजार से भी अधिक पर्यटक आते हैं। कार्यक्रम के सम्बन्ध में मोबा. : 7229948860 तथा 9314235101 पर जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

यज्ञ, योग व प्राणायाम से होगा कल्याण

डॉ० सत्यमित्र आर्य
यमलार्जुनपुर (बहराइच)।

विश्व योग दिवस (21 जून) के अवसर पर आर्य समाज यमलार्जुनपुर कैसरगंज, एवं आर्यकुल योगपीठ के संयुक्त तत्वावधान में विश्व योग सूत्रधारा से जुड़ते हुए योग आसन प्रचार-प्रसार हेतु दो स्थानों पर प्रातः 5-30 से 7-30 बजे तक यमलार्जुनपुर में जिसमें प्रतिभागियों की संख्या 40 तथा सायं 5-30 से 7-30 तक खुटेहना , जिसमें प्रतिभागियों की संख्या 60 थी। कार्यक्रम में पूर्ण वैदिक पद्धति से यज्ञ एवं आसनों का अभ्यास तथा भाषायाम का अभ्यास किया गया। सभी सम्मिलित प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। यज्ञ की व्यवस्था सत्यमित्र आर्य, मंत्री आर्य समाज ने की। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यज्ञ से वातावरण शुद्ध होता है। इसके संपर्क में आने वाली आक्सीजन गैस सक्रिय हो जाती है। इस समय योगासन, प्राणायाम करने से ये सक्रिय आक्सीजन शरीर में मानव उर्जा का संचार करती है। जिसका प्रभाव शरीर में प्रतिरोधक क्षमता के विकास में होता है। कार्यक्रम में धर्मवीर आर्य ने योग के सूक्ष्म बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। योग, आसन, प्राणायाम करने से हमारे आन्तरिक अंग बलिष्ठ होते हैं। मुख्य अतिथि उमाकांत मिश्र प्रधानाचार्य हुकुम सिंह, इन्टर कालेज ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन से योग के प्रति लोगों का रुझान बढ़ेगा। डॉ0 अभयमित्र आर्य ने लोगें के सामने आसन, प्राणायाम का प्रदर्शन कर लोगों को अभ्यास कराया। लोगों के शंका समाधान का निवारण किया। उमाप्रसाद प्रधानाध्यापक पू0 मा0 वि0 चकपिहानी ने स्वरचित कविता सुनाई। शिवनारायण, त्रिवेनीप्रसाद, कर्मचन्द पटेल, कुसुम देवी, कल्याणी देवी, कु0 पूजा वर्मा, आरती वर्मा, परमानन्द, पवन वर्मा, ओमप्रकाश वर्मा आदि अनेक लोग उपस्थित रहे।

अवश्य पढ़ें

आज ही मंगाएं

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित विभिन्न संग्रहणीय व उत्कृष्ट पुस्तकें। कम से कम सौ पुस्तकें मंगाने पर विशेष छूट है।

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा द्वारा प्रमाणित १४ आर्यपर्वों से संबंधित एक विशेष पुस्तक

आर्य पर्व पद्धति
मूल्य : २० रुपये

आर्योद्देश्य- रत्नमाला
मूल्य : ८ रुपये

गोकरुणानिधिः
मूल्य : ८ रुपये

अन्त्येष्टिकर्मविधिः
मूल्य : ८ रुपये

मकर संक्रन्ति पर्व से शताब्दी वर्ष में प्रवेश

सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत'
नेमदारगंज नवादा

आर्य समाज नेमदार गंज (नवादा) ने स्थापना के शताब्दी के नये सत्र में प्रवेश कर प्रथम आयोजन मकर संक्रान्ति पर्व के मधुर मिलन कार्यक्रम से नवादा जिला आर्य सभा के महामंत्री सत्यनारायण आर्य के पौरोहित्य में देवयज्ञ सम्पन्न कर नवनिर्मित भवन परिसर का शुभ उद्घाटन आर0पी0 साहू, निदेशक- जीवन ज्योति पब्लिक स्कूल नावादा, प्रो0 कृष्णमुरारी साह सीताराम साहू कालेज नवादा, मिथिलेश कुमार सिंह प्राचार्य- प्रोजेक्ट कन्या इन्टर विद्यालय हिसुआ, नवादा जिला ग्राम पंचायत मुखिया संघ अध्यक्ष- उदय यादव, पैक्स अध्यक्ष- मनोज कुमार आनन्द के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

आर्यों की युवा टोली ने उदय पेन्टर, हर्षवर्द्धन आर्य, लखी नारायण आर्य, रामजी आर्य, किशोर गौरव, सोनू, गुड्डू के निर्देशन एवं तत्परता से उपस्थित सज्जनों का परम्परागत दही, चूड़ा, तिलकुट, एवं स्वादिष्ट व्यंजनों से सत्कार कर आह्लादित कर दिया।

निर्माण में प्राप्त सहयोग के लिए दानदाताओं को धन्यवाद देते हुए शेष बचे निर्माण कार्य में सहयोग की अपील आर्य समाज नेमदार गंज के मंत्री सन्तशरण आर्य ने की। 'कार्य रुकेगा नहीं' ऐसा आश्वासन मिला।

परिवार, समाज तथा राष्ट्र में धर्म के नाम पर फैले गुरुडम एवं अन्धविश्वास से सचेत करते हुए आर्य समाज की आवश्यकता एवं सक्रियता को उजागर करने वाले मन्तव्य विचारकों ने उपस्थित किये।

प्रधान अश्विनी कुमार ने सबका धन्यवाद एवं आभार प्रकट किया। शान्तिपाठ से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

।। ओ३म् ।।

उच्चस्तरीय क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़

आध्यात्मिक ज्ञान-विज्ञान-पिपासु, समाधि, वैराग्य, तत्वज्ञान के अभिलाषी, आत्मकल्याण के इच्छुक, अध्ययन- स्वाध्याय-प्रेमी, भद्रशील महानुभावों !

आपके प्रिय दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन रोजड़ में योगाभ्यास के पथ पर आरोहण, प्रगति, सफलता, अन्तःकरण की परिशुद्धि ऐहिक सुख-शान्ति एवं आत्मा व परमात्मा की प्राप्ति हेतु वैदिक दर्शनों के आधार पर भाद्रपद शु. 9 से भाद्रपद शु. 14/2075 तदनुसार 18 सितंबर से 23 सितंबर 2018 तक पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक की अध्यक्षता में छः दिन का उच्चस्तरीय क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जा रहा है।

आप इस पुनीत अवसर को अपने जीवन से सम्बद्ध करें। इसमें मुख्य रूप में उच्च स्तर के साधक साधिकाएं भाग लेगें। शिविर में विशेष रूप से वेद, दर्शन आदि आर्ष ग्रन्थों के आधार पर ध्यान, उपासना का प्रशिक्षण, विवेक-वैराग्य, समाधि की प्राप्ति हेतु निदिध्यासन आदि के रूप में अनेक वैज्ञानिक विधियों एवं उपायों का परिज्ञान कराया जायेगा। इसके साथ सूक्ष्म व उच्च आध्यात्मिक स्तर की वृद्धि हेतु आंशिक रूप में दर्शनों का अध्ययन भी कराया जायेगा। यम-नियम, धारणा-ध्यान-समाधि, ईश्वर समर्पण, अविद्या आदि क्लेश निवारण जैसे अनेक सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर मार्गदर्शन किया जायेगा।

शिविरार्थी 18 सितम्बर को सायंकाल 4 बजे तक शिविर स्थल पर पहुंच जावें। शिविर का समापन 23 सितम्बर के मध्याह्न में लगभग 1 बजे होगा। शिविर की दिनचर्या प्रातः 4:00 बजे से रात्रि 9:30 बजे तक रहेगी।

प्रत्येक शिविरार्थी से निम्नलिखित बातें अनिवार्यतया अपेक्षित रहेंगी।

1. पूरे शिविरकाल में सामान्य रूप से मौन रहना होगा।
2. आर्यवन परिसर में कम से कम दो बार क्रियात्मक योग शिविर मे भाग लिया हो अथवा सघन साधना शिविर में कम से कम एक माह भाग लिया हो अथवा यहाँ के स्नातकों के द्वारा संचालित योग शिविरों में एक बार और आर्यवन के क्रियात्मक योग शिविर में एक बार भाग लिया हो।
3. शिविरार्थी को शिविर काल में चलभाष प्रयोग करने की अनुमति नहीं मिलेगी, चलभाष कार्यालय में जमा कराना होगा।
4. शिविरार्थी स्वस्थ एवं दिनचर्या पालन में समर्थ हो, रोगी न हो।
5. भोजनादि शुल्क (शिविर शुल्क) 1500/-रुपये निर्धारित किया गया है। आवास व्यवस्था सीमित होने आदि अनेक कारणों से शिविरार्थी सीमित संख्या में लिये जायेंगे तथा प्रथम आवेदकों को प्राथमिकता दी जायेगी।
6. पुरुष और माताओं/बहनों की पृथक-पृथक् व्यवस्था होगी।
7. 50वर्ष से अधिक अवस्था वाली माताओं/बहनों को शिविर में प्रवेश दिया जायेगा।
8. शिविर काल में शिविर स्थल से बाहर जाना निषिद्ध रहेगा।

शिविर में भाग लेने के इच्छुक सज्जन 3 सितम्बर से पूर्व अपना विवरण ई-मेल, डाक से अथवा हमारी वेबसाइट darshanyog.org से प्रेषित करें और स्वीकृति प्राप्त होने पर शिविर शुल्क राशि जमा करावें।

आवेदन और शिविर शुल्क जमा करने हेतु सम्पर्क सूत्र -

दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन रोजड़, पत्रा - सागपुर,ता. - तलोद, साबरकांठा गुजरात 383307, मोबाइल :- 9409415011, 9409415017

आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य की स्मृति में स्मारिका-प्रकाशन

आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य-जगत की एक प्रख्यात विभूति थे। वे जीवनपर्यन्त 'वानप्रस्थ साधक आश्रम' के विभिन्न प्रकल्पों के लिए समर्पित रहे। उनके विस्तृत कार्यों ने देश-विदेश को प्रभावित किया है। उनकी कार्यशैली, मार्गदर्शन, योजनाएं दीर्घावधि तक सहस्रों व्यक्तियों को प्रेरित करती रहेंगी। हम सभी व्यक्तियों की स्मृतियां उनके पावन संस्मरण से आप्लावित हैं। हमारी इच्छा है कि आचार्य ज्ञानेश्वर जी से संबन्धित अविस्मरणयी प्रेरक संस्मरणों को स्मारिका के रूप में प्रकाशित किया जाए। इस संदर्भ में आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप अपने संस्मरण को लेखबद्ध करके और यदि उनका कोई विशेष चित्र हो, तो वह भी कृपया हमें यथाशीघ्र प्रेषित करें, ताकि वानप्रस्थ आश्रम की इस अभिलाषा में आपका पुनीत सहयोग प्राप्त हो सके। आप अपने लेख और विशेष चित्र को ई-मेल अथवा पत्र-व्यवहार के माध्यम से प्रेषित कर सकते हैं।

पत्र व्यवहार का पता :

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, पत्रा0- सागपुर,
जिला- साबरकांठा (गुजरात)- 383307
E-mail id- vaanaprastharojad@gmail.com

अवश्य पढ़ें- आज ही मंगाएं

आर्य समाज की विचारधारा, वैदिक चिन्तन, तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों को जानने के लिए पढ़िए

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित

तथा आचार्य क्षितीश वेदालंकार द्वारा लिखित लघु पुस्तिका

आर्य समाज की विचारधारा

प्रत्येक परिवार, आर्य समाज तथा विद्यालयों में अवश्य होनी चाहिए यह लघु पुस्तिका। उत्सवों, साप्ताहिक सत्संगों, धार्मिक, सामाजिक अनुष्ठानों तथा शोभायात्रा आदि में सैकड़ों की संख्या में बांटें यह पुस्तिका, और जन-जन तक पहुंचाएं आर्य समाज व ऋषि दयानन्द सरस्वती की वैदिक विचारधारा।

न्यूनतम ५०० पुस्तकें लेने पर वितरक में नाम व पता प्रकाशन की सुविधा, तथा मूल्य में भी विशेष छूट।

हमारा पता है- **आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा**-244221 (उ.प्र.), **मो०** : 09412139333

बच्चों में सद्गुणों का विकास करना एक महान कार्य : प्रकाश आर्य

निराश्रित बालगृह में आर्य समाज का वैदिक सत्संग संपन्न

कोटा। आर्य समाज जिला सभा के तत्वावधान में रंगबाड़ी स्थित निराश्रित बालगृह में वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। यहां सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामंत्री प्रकाश आर्य ने कहा कि बच्चों में सद्गुणों का विकास करना एक महान कार्य है, क्योंकि श्रेष्ठ मानव संस्कारों से बनता है। संस्कारित व्यक्तित्व का निर्माण ही संस्थान का संकल्प होना चाहिए। आर्य समाज ऐसे ही कार्य करने वाली संस्था है।

मधुस्मृति संस्थान रंगबाड़ी में अपने प्रेरणादायक शब्दों में उन्होंने कहा कि हम सब सनाथ हैं क्योंकि परमात्मा हमारा नाथ है। जिसका हाथ परमात्मा पकड़ लेता है उसे आनंद ही आनंद मिलता है। इसलिए परमेश्वर का अपना सखा, बन्धु एवं साथी बनाये, सुख की प्राप्ति होगी। अन्त में जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने धन्यवाद दिया।

निराश्रित बालग्रह में प्रकाश आर्य व अन्य- केसरी

आर्यसमाज ने किया रक्तदान शिविर का आयोजन : प्रकाश आर्य रहे मुख्य अतिथि

रक्तदान शिविर का एक दृश्य- केसरी

अरविन्द पाण्डेय
कोटा

रक्त का कोई विकल्प नहीं है, इसलिए रक्तदान को जीवनदान कहा जाता है। अधिक से अधिक लोग स्वैच्छिक रक्तदान करें ताकि जरूरतमंदों को रक्त उपलब्ध हो सके। उक्त विचार सार्वदेषिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के महामंत्री प्रकाश आर्य ने तलवंडी स्थित एस.के.साधक मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा संचालित कृष्णा रोटरी ब्लड बैंक में आर्य समाज द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तदाताओं का उत्साहवर्द्धन करते हुए व्यक्त किये। आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि रक्तदान ऐसा दान है जिससे दूसरे का जीवन बचाया जा सकता है। कृष्णा रोटरी ब्लड बैंक के निदेषक वरिश्ठ पेथोलोजिस्ट आर्य पुत्र डॉ. वेदप्रकाष गुप्ता ने कहा कि रक्तदान के संबंध में जागरूकता की आवश्यकता है, कोटा में रक्तदान एक परंपरा बनता जा रहा है, आर्य समाज के युवा किशन आर्य (हरियाणा वाले), वेदमित्र वैदिक व अन्य लोगों ने रक्तदान किया।

पक्षियों के लिए बांधे परिण्डे

कोटा। भीषण गर्मी में जहां सब लोग प्यास एवं गर्मी से त्रस्त हैं, ऐसे समय में मूक प्राणियों, पक्षियों को पेयजल उपलब्ध कराने के अपने कार्यक्रम के अन्तर्गत आर्य समाज जिला सभा कोटा द्वारा रंगबाड़ी स्थित निराश्रित बालगृह में परिण्डे बांधे गये एवं उनमें शीतल जल भरा गया।

इस अवसर पर महामंत्री प्रकाश आर्य ने कहा कि वेद हमें सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखने एवं तदनुकूल आचरण करने की शिक्षा देते हैं। इस भीषण गर्मी में मूक पक्षियों के लिए परिण्डे बांधकर जल उपलब्ध कराने का जिला सभा का यह कार्य सराहनीय है।

जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने अपने संक्षिप्त संबोधित में कहा कि पक्षी हमारे पर्यावरण के महत्वपूर्ण घटक हैं। उन्हें भीषण गर्मी एवं लू से बचाये रखने के लिए शीतल जल उपलब्ध कराना देवीय कार्य है।

इस अवसर पर निराश्रित बालगृह की संचालिका श्रीमती बृजबाला निर्भीक, हरिगोविन्द निर्भीक सहित संस्थान के कर्मचारी बालक–बालिकाएं एवं आर्य समाज कोटा के रामचरण आर्य, पं. शोभाराम आर्य, किशन आर्य, श्रीमती विमलेश आर्य, सानिध्य आर्य एवं युवान आर्य आदि उपस्थित रहे।

कुष्ठ रोगियों की बस्ती में आर्यसमाज ने बांटी खाद्यान्न सामग्री

आर्य समाज जिला सभा कोटा द्वारा वीर सावरकर नगर स्थित कुष्ठ रोगियों की बस्ती में खाद्य सामग्री का वितरण जिलासभा प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री प्रकाश आर्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

आर्य समाज जिला सभा कोटा के प्रतिनिधियों ने नये जिला कलेक्टर गौरव गोयल से की शिष्टाचार भेंट

आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुन देव चढ्डा के नेतृत्व में आर्यसमाज के प्रतिनिधि मण्डल ने जिला कलेक्टर से भेंट कर उन्हें आर्य समाज द्वारा संचालित गतिविधियों की जानकारी दी गई तथा सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया गया। प्रतिनिधि मण्डल ने कलेक्टर गौरव गोयल से कोटा में आत्मा ले जाने के नाम पर किये जा रहे पाखण्ड पर रोक लगाने की मांग भी की।

१० दिवसीय युवा चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षा योग एवं प्राणायाम शिविर का भव्य दृश्य- केसरी

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का 10 दिवसीय भव्य शिविर सम्पन्न

डॉ. विवेक आर्य (8423507590)
भरूवा सुमेरपुर

23 मई से 1 जून 2018 तक आर्य समाज भरूवा सुमेरपुर के अन्तर्गत श्री गायत्री विद्या मन्दिर इण्टर कालेज में 10 दिवसीय युवा चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षा योग एवं प्राणायाम शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रदेश के 45 जनपदों से 396 युवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

शिविर का उदघाट्न कानपुर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान अशोक आनन्द एवं अशोक पुरी, चन्द्र आर्य ने संयुक्त रूप से किया।

मुख्य वक्ता डा0 सत्यकाम आर्य एंव विशिष्ट वक्ता आनन्द आर्य मंत्री जिला सभा रहे। अध्यक्षता सुमेरपुर नगर पंचायत के अध्यक्ष आनन्दी प्रसाद पालीवाल ने की। शिविर में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक डा0 स्वामी देवव्रत सरस्वती का सानिध्य रहा। इस अवसर पर रूपेन्द्र आर्य, सत्यम आर्य, भूदेव आर्य, धर्मेन्द्र आर्य, विनय आर्य, दिनेश आर्य, उमेश आर्य, अमर आर्य, मनीश आर्य तथा विकल्प आर्य ने प्रशिक्षण दिया।

शिविर में हरिशंकर अग्निहोत्री, पंकज आर्य, ब्र0 नरेन्द्र आर्य, प्रमोद आर्य, जयनरायण आर्य, दीन दयाल आर्य, हरीसिंह आर्य, सियाराम आर्य, कृष्ण आर्य, डॉ0 सर्वेश आर्य तथा संदीप वैदिक आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। समापन से 1 दिन पूर्व भव्य शोभा यात्रा भी निकाली गई जिसमे गणवेश से सुसज्जित आर्यवीर सजे हुए घोड़ों पर सवार होकर ओ3म् ध्वजा व तलवार लेकर आगे–आगे चल रहे थे। आर्यवीर दल का घोष बैन्ड मनमोह रहा था। वैदिक धर्म कि जय के नारे लगाती आर्य वीरों की टोलियां आकर्षण का केन्द्र थीं।

शोभा यात्रा में प्रदेश के लगभग 50 जनपदों के आर्यसमाजों के प्रतिनिधि भारी संख्या में साथ उपस्थित थे। शोभा यात्रा का नगर में जगह–जगह शर्बत, मिष्ठान एवं शीतल जल से स्वागत किया गया। प्रमुख मार्गों से होते हुए शिविर स्थल में शोभा यात्रा का समापन हुआ। शिविर के दीक्षांत एंव समापन समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने उद्बोधन मे कहा कि शिविर व्यवस्था एवं भारी संख्या में प्रतिभागी आर्यवीरों को देख कर प्रसन्नता व्यक्त की।

इस दस दिवसीय आयोजन में ओम प्रकाश आर्य ने कहा कि इतनी गर्मी में जब पारा 47 के पार जा रहा है तब भी यह आर्यवीर युवा कठोर परिश्रम करके व्यस्ततम दिनचर्या में जीवनोपयोगी सिंद्वान्तों को सीखने में अडिग हैं।

अपने दीक्षांत भाषण में स्वामी देवव्रत सरस्वती ने प्रत्येक आर्यवीर को संकल्प करवाते हुए आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर हजारों की संख्या में दर्शक उपस्थित थे। शिविर के अन्त में आर्यसमाज के प्रधान प्रेम कुमार श्रीवास्तव ने सभी का आभार व्यक्त किया।

ऋग्वेद

।। ओ३म् ।।

यजुर्वेद

‘सत्यार्थ प्रकाश’

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

● पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र ‘सत्यार्थ प्रकाश’ व आर्यावर्त केसरी प्रकाशित किये जाएंगे। घोषित धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं हैं। ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी घोषित धनराशि भेजी जा सकती हैं। धन्यवाद

।। योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ।।

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं।
- न्यूनतम रु0 3100/– की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/– (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/– (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ नि:शुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/–, 3100/–, 2100/–, 1100/– की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमशः 51, 31, 21, 11 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8 वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 16 प्वाइंट
5. ‘सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे।
6. ‘सत्यार्थप्रकाश’ की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ है तथा इसका मूल्य 150/– प्रति ग्रन्थ है।

पता– डॉ. अशोक कुमार आर्य ‘सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि’, आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा–244221
Ph. : 05922-262033, 09412139333, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद

अथर्ववेद

१० दिवसीय युवा चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षा योग एवं प्राणायाम शिविर का भव्य दृश्य- केसरी

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के तत्वावधान में हुआ

आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर का भव्य आयोजन

◆ चरित्र निर्माण आज की सबसे बड़ी आवश्यकता–रामनिवास गोयल, अध्यक्ष दिल्ली विधान सभा

◆ महर्षि दयानन्द के जीवन मूल्यों से युवा प्रेरणा लें –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

डॉ. अनिल आर्य
दिल्ली

समाजसेवी व आर्यनेता ठाकुर विक्रम सिंह का स्वागत करते राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य- केसरी

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में शिक्षाविद् पुष्पा भाटिया के सान्निध्य में 9 से 16 जून तक दयानन्द मॉडल स्कूल, विवेक विहार, पूर्वी दिल्ली में विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व विकास शिविर का भव्य आयोजन हुआ। शिविर में 250 किशोर व युवकों ने प्रातः 4 बजे से रात्रि 10 बजे तक अनुशासित दिनचर्या में रहकर नैतिक शिक्षा, योगासन, दण्ड–बैठक, लाठी, तलवार, जूडो–कराटे, बाक्सिंग, स्तूप, डम्बल, लेजियम, सन्ध्या यज्ञ, भाषण कला, नेतृत्व कला, देश भक्ति की भावना, भारतीय संस्कृति की महानता पर शिक्षकों व वैदिक विद्वानों से बौद्धिक व शारीरिक प्रशिक्षण प्राप्त किये।

इस अवसर पर दिल्ली विधान सभा के अध्यक्ष रामनिवास गोयल ने कहा कि आज राष्ट्र व समाज में नैतिक मूल्यों का निरन्तर पतन हो रहा है। युवा शक्ति को चरित्रवान बनाने में आर्य समाज बखूबी कार्य कर रहा है। आज तीव्र गति से चरित्रवान युवा पीढ़ी के निर्माण की समाज को अत्यन्त आवश्यकता है तभी समाज का ताना बाना सुरक्षित रह पायेगा। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द एक महान क्रांतिकारी महापुरूष थे। उन्होंने स्वदेशी का नारा दिया।

शिविराध्यक्ष व केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने कहा कि चरित्रवान युवक ही राष्ट्र की अमूल्य सम्पति हैं। महर्षि दयानन्द ने लोगों की वैचारिक सोच बदल कर सोचने की दिशा ही बदल डाली। उनके समाज व राष्ट्र उत्थान के कार्यों को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

समारोह का शुभारम्भ आर्य नेता ठाकुर विक्रम सिंह ने ओ3म् ध्वज फहराकर किया। उन्होंने समाज को एकजुट होने का आह्वान किया तथा कहा कि यदि सभी आर्यजन इकट्ठा हो जायें तो देश की राजनीति की दिशा ही बदल जायेगी।

शिविर में पूर्व विधायक जितेन्द्र सिंह शन्टी, समारोह अध्यक्ष प्रवीन भाटिया, परिषद् के राष्ट्रीय महामन्त्री आचार्य महेन्द्र भाई, आचार्य भानुप्रकाश शास्त्री व प्रवीन आर्या, प्रधान शिक्षक शंकरदेव आर्य, योगेन्द्र शास्त्री, सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य, प्रदीप आर्य, शिवम मिश्रा, आशीष आर्य, अनुज आर्य, गौरव गुप्ता, वरूण आर्य के निर्देशन ने युवकों को दिशा दी। सभी ने भव्य व आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन के कार्यक्रमों की मुक्त कंठ से सराहना की।

इस अवसर पर पूर्व पार्षद प्रीति, प्रधानाचार्या सीमा भाटिया, उतरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान ओम सपरा, रविन्द्र मेहता, यशोवीर आर्य, धर्मपाल आर्य, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, यशपाल शास्त्री, चन्द्रशेखर शर्मा, ईश कुमार नांरग, उषाकिरण कथूरिया, विजयारानी शर्मा, सरोज–जवाहर भाटिया, राजकुमारी शर्मा, गायत्री मीना, जितेन्द्र आर्य, स्वतन्त्र कुकरेजा, वीरेन्द्र योगाचार्य, रामकृष्ण शास्त्री, भानुप्रताप वेदालंकार आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे। सैंकडों आर्यजनों ने युवा शक्ति का उत्साहवर्धन किया व ऋषि लंगर का भी आनन्द लिया।

ठा० विक्रम सिंह
राष्ट्रीय अध्यक्ष

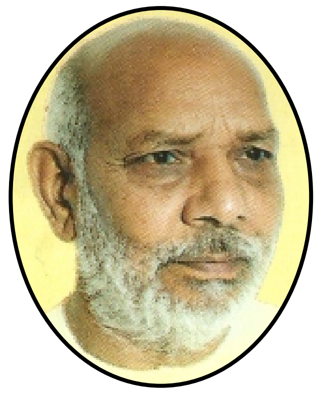

अराजकता, भ्रष्टाचार, शेषण, सरकारी लूट-खसोट, तानाशाही, बलात्कार, मुस्लिम तुष्टिकरण, कॉरपोरेट लूट

अमीर और भी अमीर / गरीब और भी गरीब

जनता कंगाल – नेता मालामाल

क्या इसी के लिए हम स्वतंत्र हुए थे?

आइए, मिलकर इन सबके विरुद्ध एक नई आजादी के लिए संघर्ष करें

राष्ट्रभक्तों का संगठन

राष्ट्र निर्माण पार्टी

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा पंजीकृत राजनीतिक दल

डॉ० वरुण वीर
राष्ट्रीय महासचिव

क्षेत्रीय कार्यालय : ए–41, लाजपतनगर II, निकट– मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली– 24, फोन : 011–45791152, 29842527, 9313254938
प्रान्तीय कार्यालय : मोदीपुरम बाईपास, निकट– रेलवे फाटक, मेरठ (उ0प्र0), फोन : 0121–3191555, 9971284450, 9917063562

यदि चाहते हो कल्याण

तो आओ आर्य समाज के साथ

सन् 1875 को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मुम्बई की कांकड़वाड़ी में आर्यसमाज की स्थापना की। सामाजिक सुधारों के नवजागरण का पुरोधा आर्यसमाज अपनी स्थापना से ही अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है। विगत उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारत में अनेक समाज सुधारक संस्थाओं का प्रादुर्भाव हुआ, किंतु वे संस्थाएं समय के चक्र में काल-कावलित हो कहां चली गयीं, बताना कठिन है। किंतु आर्यसमाज आज भी अपनी दस हजार से अधिक शाखाओं के साथ अडिग प्रहरी के समान दृढ़तापूर्वक खड़ा होकर समाज का पथ प्रशस्त कर रहा है। इन सबका कारण है आर्यसमाज के अपने विश्वव्यापी वे सिद्धांत, जो इसकी स्थापना के साथ ही इसके संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसे प्रदान किये, जो तेजी से बदलते आज के युग में उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने विगत शताब्दियों में रहे हैं। समाज में व्याप्त, अन्याय, अभाव, अहंकार का प्रशमन ही आर्यसमाज की कार्ययोजना है।

यद्यपि इक्कीसवीं सदी में शिक्षा और विज्ञान ने मानव जीवन में आमूल चूल परिवर्तन कर दिया, फिर भी वह अपनी परम्परागत रूढ़ियों, कुरीतियों तथा सामाजिक अंधविश्वासों से पृथक् नहीं हो पाया है। तकनीक ने इसके बाह्य स्वरूप को तो बदल दिया, किंतु आन्तरिक आत्मा का विकास अभी भी अधूरा है। समाज में व्याप्त अन्याय, अनाचार, भ्रष्टाचार, आडम्बर, असमानता, अस्पृश्यता, अनैतिकता आज भी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा शैक्षिक विसंगतियों की चादर ओढ़े मानव मात्र का नित नयी विधियों से शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शोषण कर रही है। धर्म का वर्तमान स्वरूप मनुष्य जाति को जोड़ने की जगह तोड़ने का कार्य कर रहा है। वसुधैव कुटुम्बकम् का वर्तमान नारा केवल व्यापार को बढ़ावा देने तक सीमित हो गया है। समाज, समाज न रहकर व्यापारिक मण्डी हो गयी, जहाँ दबी-कुचली मानवता विभिन्न रूपों में बिके जा रही है। न जाने कितनी ही तंत्र-मंत्र, अंध विश्वास की घटनाएं प्रतिदिन समाज में घटती हैं और दर्शाती हैं कि विज्ञान के इस युग में भी व्यक्ति की मानसिकताओं में परिवर्तन की उतनी ही जरूरत है, जितनी पहले थी। तेजी से बदलते परिवेश में भी रूढ़िगत कुरीतियों, पाखण्ड और अंधविश्वास से हम आज भी मुक्त नहीं हुए हैं। यदि प्रात:काल टी0वी0 के चैनलों को खोलकर देखें, तो हर चैनल पर भविष्य, राशिफल, तंत्र-मंत्र से बने समृद्धि के यंत्र, ताबीज बिकते नजर आते हैं। यदि इस मानसिकता से कोई मुक्ति दिला सकता है, तो वह मात्र आर्यसमाज ही है। वर्तमान में पारिवारिक मूल्यों का होता ह्रास, युवाओं में बढ़ती संस्कारहीनता, संबन्धों का दरकना, आधुनिकीकरण के नाम पर शराब तथा मांस का बढ़ता प्रचलन इन सबने एक ऐसे सामाजिक परिवेश का निर्माण कर दिया, जो कल्पनीय नहीं है। महिलाओं के साथ बढ़ते बलात्कार, तेजाब फेंकने की घटनाएं, कन्याभ्रूण हत्या, दहेज के लिए उत्पीड़न, इज्जत की खातिर खाप पंचायतों द्वारा बेटियों को मारने का फरमान, फिल्म एवं टी0वी0 द्वारा नारी को मात्र उपभोग की वस्तु बना प्रस्तुत करना, नारी समाज पर अत्याचार के नये तरीके हैं। आज देश में बड़े व्यापक एवं सुनियोजित ढंग से आधुनिकीकरण के नाम पर भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को नष्ट किया जा रहा है। युवाओं में अपनी संस्कृति एवं सभ्यता के प्रति हीनता की भावना भरी जा रही है।

उपरोक्त कही गयीं समस्त समस्याओं से आर्यसमाज ने बीती 20वीं सदी में सफलतापूर्वक संघर्ष किया है। आर्यसमाज ने जातिवाद, अशिक्षा, अंधविश्वास, पाखण्ड, तथा समस्त कुरीतियों से समाज को बचाने का कार्य किया है। उसने महिला स्वाभिमान की रक्षा की है। देश की संस्कृति का संरक्षण किया है। युवाओं में देशभक्ति एवं स्वाभिमान जगाया है। परिवार में संस्कारिक वातावरण बनाने का कार्य किया है। अंधविश्वास, पाखण्ड, तंत्र का खुलकर विरोध किया है। आर्य समाज का इन सबके बीच सफल होने का कारण है, उसका एकमात्र ईश्वर में विश्वास, वेदों को प्रमाण मानना तथा वेदानुकूल आचरण, आर्षग्रन्थों का पठन-पाठन, यज्ञ संस्कृति में विश्वास, राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक चेतना, हिन्दी एवं संस्कृत से जुड़ाव, शंका समाधान, भ्रमोच्छेदन, तर्क आश्रित, नैतिक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक मूल्यों का संरक्षण, वसुधैव कुटुम्बकम् की उदार भावना। ये वे तत्व हैं, जिनसे आर्यसमाज ने भूतकाल के समाज का मार्गदर्शन किया और भविष्य में भी समाज के विकास में ज्योति स्तम्भ का कार्य करता रहेगा।

-अतिथि सम्पादकीय- अर्जुन देव चढ्डा जिला प्रधान, कोटा

मॉरीशस में होगा ११वां ऐतिहासिक विश्व हिन्दी सम्मेलन

18 से 20 अगस्त 2018 तक मॉरीशस में आगामी 11वां विश्व हिन्दी सम्मेलन होगा। इससे पूर्व भारत में 10वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन, मध्य प्रदेश सरकार की भागीदारी के साथ 10-12 सितंबर, 2015 तक मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में सम्पन्न हुआ, जिसे आयोजित करने का निर्णय सितंबर, 2012 में दक्षिण अफ्रीका के जोहांसबर्ग शहर में आयोजित नौवें विश्व हिंदी सम्मेलन में लिया गया था तथा मॉरीशस में होने वाले इस 11वें विश्व हिन्दी सम्मेलन का निर्णय भोपाल में हुआ था।

सम्मेलन स्थल पर विशेष प्रदर्शनियां लगाई जाएंगी। प्रदर्शनी स्थल पर, हिंदी की पुस्तकों के लोकार्पण के लिए अलग से एक स्थान निर्धारित किया जाएगा जहाँ पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का लोकार्पण समानांतर रूप से चलता रहेगा।

१०वां विश्व हिन्दी सम्मेलन
१०-१२ सितंबर, २०१५
भोपाल, भारत

हर प्रकार से यादगार रहा था १०वां विश्व हिन्दी सम्मेलन

पूर्ववर्ती विश्व सम्मेलनों की थीम

पूववर्ती दस विश्व हिंदी सम्मेलनों के मुख्य विषय इस प्रकार थे–

1. पहले से चौथा विश्व हिंदी सम्मेलन– **वसुधैव कुटुंबकम**
2. पांचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन– **आप्रवासी भारतीय और हिंदी**
3. छठा विश्व हिंदी सम्मेलन– **हिंदी और भावी पीढ़ी**
4. सातवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन– **विश्व हिंदी नई शताब्दी की चुनौतियाँ**
5. आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन– **विश्व मंच पर हिंदी**
6. नौवां विश्व हिंदी सम्मेलन– **भाषा की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ**
7. दसवां विश्व हिंदी सम्मेलन– **हिंदी जगत : विस्तार एवं संभावनाएँ**

इन्हें प्राप्त है विश्व सम्मेलन का गौरव

अब तक दस विश्व हिंदी सम्मेलन विश्व के विभिन्न शहरों में आयोजित किए जा चुके हैं – वस्तुतः दो बार पोर्ट लुई (मॉरीशस) में, दो बार भारत में, पोर्ट ऑफ स्पेन (ट्रिनिडाड एण्ड टोबेगो), लंदन (यू.के.), पारामारिबो (सूरीनाम), न्यूयार्क (अमरीका), जोहांसबर्ग (दक्षिण अफ्रीका) तथ भोपाल (भारत) में। इन सभी ऐतिहासिक सम्मेलनों ने हमेशा से ही प्रख्यात विद्वानों और हिंदी से स्नेह रखने वाले लोगों को आकर्षित किया है।

विगत-9 विश्व हिंदी सम्मेलनों का तिथिवार विवरण

सं. सम्मेलन	स्थान	आयोजन वर्ष
1. प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन	नागपुर (भारत)	10–12 जनवरी, 1975
2. द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन	पोर्टलुई (मॉरीशस)	28–30 अगस्त,1976
3. तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन	नई दिल्ली (भारत)	28–30 अक्तूबर, 1983
4. चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन	पोर्टलुई (मॉरीशस)	02–04 दिसंबर, 1993
5. पांचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	पोर्ट ऑफ स्पेन ट्रिनिडाड एण्ड टोबेगो	04–08 अप्रैल, 1996
6. छठा विश्व हिंदी सम्मेलन	लंदन (यू.के.)	14–18 सितंबर, 1999
7. सातवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	पारामारिबो (सूरीनाम)	06–09 जून, 2003
8. आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	न्यूयार्क (अमरीका)	13–15 जुलाई, 2007
9. नौवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	जोहांसबर्ग (द.अफ्रीका)	22–24 सितंबर, 2012
10. दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन	भोपाल (भारत)	10–12 सितंबर, 2015

पर्यावरण बचाएं, हवन यज्ञ कराएं

विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाता है, किंतु शुद्ध देशी घी एवं सामग्री से हवन न होने के कारण पर्यावरण को क्षति होती है। मनुष्य अपने शरीर से जितना दुर्गन्ध फैलाते हैं, उतना सुगन्ध भी हवन यज्ञ से फैलाएंगे, तभी पर्यावरण संतुलन रहेगा। देश में कई क्षेत्रों से सर्वाधिक प्रदूषण होता है। पैट्रोलियम रिफाइनरी के चिमनी धुएं से वैश्विक ताप बढ़ता है और जलवायु परिवर्तन समस्याओं का निदान नहीं होता। इसी प्रकार पशु-पक्षियों की हत्या से भी प्रदूषण बढ़ता है। बाजार में नकली घी सामग्री पूजा के नाम पर बिक्री करके मोटी रकम वसूली जाती है। परिणामस्वरूप हवन यज्ञ में भी पूजा के लिए चर्बी की आहुति प्रदान की जाती है। मोटर वाहनों के नकली प्रदूषण प्रमाण पत्र से मोटी रकम पैदा करके प्रदूषण करते हैं। अत: देखभाल कर असली घी खरीदें।

बीड़ी सिगरेट सैंसर, तभी बचेगा कैंसर

विश्व तम्बाकू निषेध दिवस 31 मई को मनाया जाता है। किंतु शासकीय/ अर्धशासकीय कर्मचारी/ अधिकारी तम्बाकू, पान मसाला सेवन करके थूकते रहते हैं, जिससे गन्दगी फैलती है और कैंसर आदि की बीमारियां होती हैं। कोटपा अधिनियम 2003 के अनुसार तम्बाकू में कैमिकल मिलाना दण्डनीय होता है और सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान के साथ तम्बाकू पान मसाला सेवन वर्जित है। सेवन करने वालों से 200 रुपये जुर्माना वसूलने का प्रावधान है, जिसके लिए जिला एण्टी सेल का गठन किया गया है। किंतु जब अधिकारी स्वयं सेवन करते है, तब 200 रुपये जुर्माना नहीं जमा करते हैं, जिससे राजस्व की क्षति होती है और जनजीवन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। अत: तम्बाकू मसाला सेवन एवं धूम्रपान करने पर जुर्माना करें।

-श्रद्धानन्द योगाचार्य, बजरिया कायमगंज, फर्रुखाबाद

भव्य शोभायात्रा, 61 कुण्डीय विराट यज्ञ, कवि सम्मेलन सहित विभिन्न आर्य सम्मेलनों के साथ हुआ गुधनी का यज्ञ महोत्सव

गुधनी (बदायूँ)। उत्तर प्रदेश के बदायूं जनपद की तहसील बिल्सी के ग्राम गुधनी में गतवर्षो की भांति इस वर्ष भी यज्ञ महोत्सव ऐतिहासिक रहा। यज्ञ महोत्सव में अथर्ववेद पारायण यज्ञ विधिवत् प्रारम्भ हुआ! वेद मंत्रों से वेदपाठी बेटियां व विद्वान आहुतियाँ लगवाते रहे और यजमान बड़ी श्रद्धा से पर्यावरण की शुद्धि के व रोग आदि के निवारण हेतु आहुतियां डालते रहे। यज्ञ महोत्सव के निदेशक आचार्य संजीव रूप ने यज्ञ कराया जबकि स्वामी वेद प्रकाश सरस्वती ने यज्ञ का व्रह्मत्व किया। इस अवसर पर उझानी से पबनीश गोयल, अवनीश गोयल ,प्रदीप गोयल तथा बिसौली से सुभाष चंद्र अग्रवाल ,राजीव गुप्ता, साहू सावेन्द्र जी ,विशाल जौहरी, अनिल गुप्ता एडवोकेट, विशेष यजमान रहे । इस अवसर पर बिजनौर से पधारे आचार्य विष्णु मित्र वेदार्थी ने कहा कि काम करने को जागृत अवस्था होती है तथा विश्राम करने को सुषुप्ति अवस्था होती किंतु हम सब स्वप्नावस्था में ही रहते हैं जिसके कारण हमारा आयु लंबा नहीं होता। जिसे लंबी आयु प्राप्त करनी हो उसे ईश्वर की उपासना व यज्ञ आदि सत्कर्म करने ही होंगे। स्वामी वेदप्रकाश सरस्वती ने कहा कि व्यक्ति को उसका सकारात्मक दृष्टिकोण ही महान बनाता है । हरिद्वार से पधारी कुमारी निकिता आर्या ने सुंदर भजन सुनाते हुए कहा कि " ईश्वर को न जानने के कारण भी लोग नाना प्रकार के पाखंड और बुराइयों में फंसे हुए पंडित उदय राज आर्य, स्वामी वेदानंद जी ने भी अपने विचार रखें ।सुभाष चन्द्र अग्रवाल ने उपस्थित श्रद्धालुओं को अच्छी बातों के संकल्प कराएं । पहले दिन 124 यजमानों ने भाग लिया , तथा सैकड़ों श्रद्धालु भी आहुति देने आए। कार्यक्रम में दिल्ली से पुरुषोत्तम आर्य रामानंद आर्य इस्लामनगर से भूदेव आर्य बदायूं से रामप्रकाश आर्य ,बरेली से मुकेश आर्य ,संजय सिंह, अगरपाल सिंह ने भी विशेष सहयोग किया।

यज्ञ महोत्सव के अगले दिन अनेक सम्मेलन हुए जिनमें आर्य वीर वीरांगना सम्मेलन, वेद सम्मेलन एवं ग्रहस्थ सम्मेलन। सबसे पहले 61 कुंडीय यज्ञ आरंभ हुआ । यज्ञ महोत्सव के निर्देशक आचार्य संजीव रूप ने स्वामी वेदप्रकाश सरस्वती के सहयोग से यज्ञ कराया ।

इस अवसर पर स्वामी वेद प्रकाश सरस्वती ने कहा कि यज्ञ जीवन का आधार है! यज्ञ संसार का सर्वोत्तम कर्म है क्योंकि यज्ञ से प्राणी मात्र का भला होता है और पर्यावरण शुद्ध होता है।

बिजनौर से पधारे आचार्य

शेष पृष्ठ- 10 पर

भव्य शोभा यात्रा के साथ शुरु हुआ महोत्सव

आर्य समाज गुधनी के 104 वें वार्षिकोत्सव के तत्वावधान में आयोजित "यज्ञ महोत्सव 2018" का आज भव्य "शोभा–यात्रा" के साथ शुभारम्भ हो गया। यज्ञ स्थल प्राथमिक विद्यालय से नगरपालिका अध्यक्ष बदायूं दीपमाला गोयल व नगरपालिका अध्यक्ष बिल्सी अनुज वार्ष्णेय की उपस्थिति में सर्व प्रथम राष्ट्रीय गान हुआ तथा उपस्थित पॉच सौ से अधिक माताओं बेटियों को वृक्ष दिए गए, और फिर ओम ध्वज लेकर श्रीमती दीपमाला गोयल व अनुज वार्ष्णेय अनेक वृक्ष धारी ,कलशधारी महिलाओं व आर्य वीर दल के सैनिकों व संतों के साथ नगर भ्रमण को निकले। इससे पूर्व महोत्सव के निर्देशक आचार्य संजीव रूप ने अपने मंत्री अगरपाल सिंह,संजय सिंह,प्रधान ओमप्रकाश सिहं ,बद्रीप्रसाद आर्य ,राकेश आर्य के साथ अतिथियों का ओम पट व पगड़ी पहनाकर व तुलसी वृक्ष देकर सम्मान किया। शानदार शोभा यात्रा का रास्ते में डॉ विजय सिंह सोलंकी , शिशुपाल सिंह, हरिराम कश्यप ,पन्ना लाल कश्यप व खौंसारा ग्राम के अंदर जयप्रकाश झा उदयवीर झा ने जलपान कराके स्वागत किया।

शोभा यात्रा को आर्य वीर दल आर्य संस्कार शाला के बच्चों ने अपने करतब दिखाकर बेहतर बना दिया दर्शनीय बना दिया पीले वस्त्रों में सजी हुई महिलाएं बेटियां वृक्षों को लेकर चलती हुई अत्यंत धार्मिकता का प्रदर्शन कर रही थीं। शाम को कुरीतियों व पाखण्ड के विरूद्ध "जादूगर सम्मेलन" हुआ।

महोत्सव के एक दिन पूर्व निकाली बिल्सी में प्रचार रैली

आर्य समाज गुधनी के 104 में वार्षिकोत्सव के तत्वावधान में आयोजित यज्ञ महोत्सव 2018 के एक दिवस पूर्व आज बिल्सी में भव्य प्रचार रैली निकाली गई ।यज्ञ महोत्सव के निदेशक आचार्य संजीव रूप के निर्देशन में रैली सर्वप्रथम थाना परिसर में पहुंची ,जहां थाना प्रभारी निरीक्षक संजय राय ने रैली का स्वागत किया तथा पर्यावरण की शुद्धि के लिए पीपल व अमरुद के दो वृक्ष भी आचार्य संजीव रूप के साथ लगाए। इसके पश्चात रैली नगर भर में प्रचार करती हुई व निमंत्रण पत्र बॉटती हुई अम्बियापुर चौराहे पर आकर समाप्त हुई। रैली का स्वागत चेयरमेन बिल्सी के पिता श्री नरेंद्र बाबू वार्ष्णेय, हनी फोटो स्टूडियो, अजीत सक्सेना, यशपाल गुप्ता खौंसारा वालों ने जलपान करा कर किया। रैली में आर्य वीर दल गुधनी के वीरों ने अनेक प्रकार के प्रदर्शन भी स्थान स्थान पर किए ,व स्तूप भी बनाए।

कैमरे की नज़र में- आर्यसमाज गुधनी का १०४वां वार्षिक यज्ञ महोत्सव

यह है तीर्थ नगरी गुधनी, जहां यज्ञ की अग्नि कभी नहीं बुझती

● आर्य समाज के यज्ञ महोत्सव में अतिथियों के साथ मंचासीन आर्यसमाज के अन्तर्राष्ट्रीय प्रचारक आचार्य संजीव रूप व समारोह में उपस्थित जनसमूह

● पवित्र बहु कुण्डीय यज्ञ अनुष्ठान में सहभागिता करते श्रद्धालु यजमान

● आर्य संस्कारशाला के बच्चों की कार्यक्रम प्रस्तुति का एक भव्य दृश्य

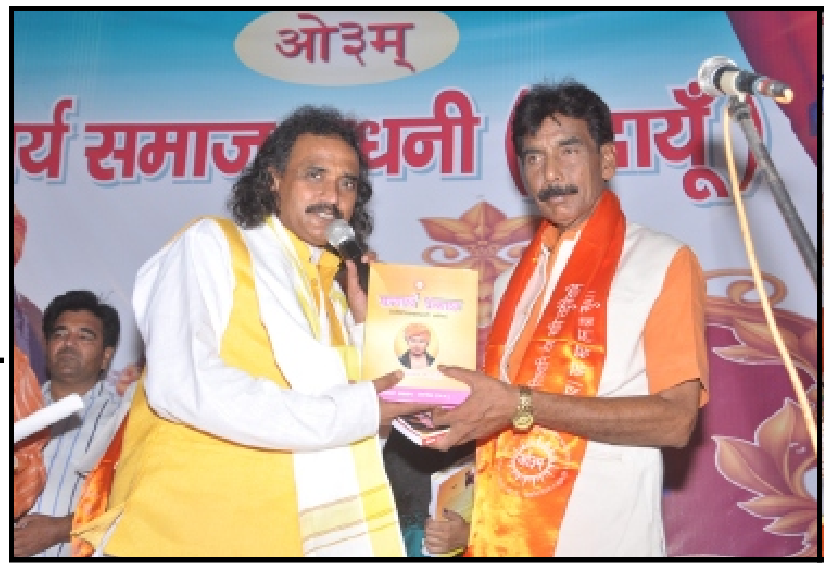

● 'अतिथि देवोभव' अतिथियों का सत्यार्थ प्रकाश के साथ स्वागत करते आचार्य संजीव रूप

● कवि सम्मेलन में मंचासीन कविगण एवं सभागार में उपस्थित भाव विभोर श्रोतागण

● श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ में पवित्र आहुति देते श्रद्धालु यजमान

● कार्यक्रम का सफल संचालन व अतिथियों का सम्मान करते कार्यक्रम के सूत्रधार आचार्य संजीव रूप

● शोभायात्रा में सहभागिता करते परिजन व अन्य श्रद्धालु

● जनमानस में उत्साह का संचार करते आचार्य संजीव रूप

● आर्य वीरों के शानदार प्रदर्शन की एक झलक

● यज्ञ महोत्सव में अतिथियों का स्वागत करते आचार्य संजीव रूप

● मुख्य अतिथि डॉ. अशोक कुमार आर्य के अभिनन्दन का दृश्य

● अतिथियों का प्रतीक चिन्ह व साहित्य भेंट करते आचार्य जी

● मंच पर तीरंदाज द्वारा अभिवादन स्वीकार करते डॉ. अशोक कुमार आर्य व मेंथा व्यापारी पप्पू सेठ

पृष्ठ- ७ का शेष....

विष्णु मित्र वेदार्थी ने कहा कि कमजोर से कमजोर व्यक्ति भी हवन कर सकता है, यदि कोई निर्धन व्यक्ति प्यासे को पानी पिला देता है या अंधे को रास्ता बता देता है तो यह उसका यज्ञ ही है। कुलदीप विद्यार्थी ने भजन सुनाते हुए कहा कि यज्ञ करने वाले को भविष्य में गारंटी से सुखी मनुष्य का जन्म ही मिलता है। कुमारी निकिता आर्य ने सुंदर भजन सुनाकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया ।कुमारी तृप्ति आर्य साक्षी आर्य प्रियंका आर्य मोना आर्य ने वेद पाठ किया पाठ किया। इस अवसर पर बिल्सी से बाबा इंटरनेशनल स्कूल के चेयरमैन नरेंद्र वार्ष्णेय, महेश चंद्र गुप्ता, कृष्ण गोपाल गुप्ता, विनोद सक्सेना, सुमित सक्सेना, विशाल जौहरी, जगपाल सिंह परसिया, प्रमोद कुमार सिंह, अरविन्द सक्सेना, सुभाष चन्द्र आर्य, संजय सिंह, अगरपाल सिंह, राकेश आर्य, बद्री प्रसाद आर्य, किशनपाल आर्य, लिटिल आर्य,सत्यम आर्य प्रश्रयआर्य विशेष, अंशुल, सोनू, शिवम व सैकड़ों स्थानों से भक्तगण उपस्थित रहे। आज बड़ी संख्या में वृक्षारोपण करने के लिए पद्मांचल सेवा समिति दिधोनी को भी सम्मानित किया गया।

महोत्सव में 61 कुंडीय यज्ञ शुभ संकल्पों के साथ संपन्न हो गया। यज्ञ में सैकड़ों स्थानों से हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। यज्ञ के निदेशक वेद कथाकार, सुप्रसिद्ध समाज सुधारक आचार्य संजीव रूप ने यज्ञ कराते हुए यजमानों को अपनी बुराइयां छोड़ने की दक्षिणा मांगी और उनके लंबी आयु की कामना प्रभु से की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि दर्जा राज्यमंत्री बी एल वर्मा ने भी आहुतियां दीं और कहा कि "आचार्य संजीव रूप का यह पुरुषार्थ राष्ट्र को समुन्नत करने के लिए है। यहाँ शिक्षा है, संस्कार हैं,संस्कृति है सत्संग है। उन्होंने यज्ञ महोत्सव के माध्यम से पर्यावरण की शुद्धि करने के लिए यज्ञ महोत्सव समिति को धन्यवाद दिया। इस अवसर पर बरेली से आए विशिष्ट अतिथि डॉक्टर गोपाल दत्त ने कहा कि मुझे इस यज्ञ तीर्थ भूमि में आ करके बहुत खुशी मिलती है यहां का वातावरण अत्यंत सौम्य व सरल है। प्रसिद्ध विद्वान आचार्य विष्णुमित्र विद्यार्थी ने कहा कि मनुष्य यज्ञ व दान से महान बनता है। दान एक दीर्घकालिक भोग है। पंडित कुलदीप विद्यार्थी ने कहा कि "सत्कर्मों को करने में मनुष्य को कभी पीछे नहीं रहना चाहिए क्योंकि सत कर्म ही मनुष्य को महान बनाते हैं हरिद्वार से आई कुमारी निकिता आर्य ने भजनों के माध्यम से अपनी बात रखी।

इस अवसर पर सम्भल बहजोई, अलीगढ, दिल्ली मुरादाबाद, शाहजहांपुर, कासगंज सोरों, बिल्सी, बिसौली इस्लामनगर सिठौली आदि से सैकड़ों स्थानों से श्रद्धालु पहुंचे थे। आर्य समाज की ओर से मास्टर अगरपाल सिंह ओमप्रकाश सिंह, संजय सिंह, बद्री प्रसाद आर्य, राकेश आर्य आदि ने अतिथियों विद्वानों का मान किया व सभी को कैलेंडर पुस्तक आदि भारी संख्या में वितरित किए। कुमारी तृप्ति आर्या, कुमारी साक्षी, कुमारी मोना, कुमारी प्रियंका, कुमारी ईशा ने वेद पाठ किया।

सहयोगियों व प्रतिभाओं का किया सम्मान

आर्य समाज गुधनी के तत्वावधान में होने वाले यज्ञ महोत्सव के सहयोगियों को तथा विभिन्न क्षेत्र के विशिष्ट लोगों को सम्मानित किया जा रहा है। ये सम्मान समारोह 1 सप्ताह तक जनपद भर में चलेगा ।यज्ञ महोत्सव के निदेशक अंतर्राष्ट्रीय वेद कथाकार व समाज सुधारक आचार्य संजीव रूप स्वयं विशिष्ट लोगों का अभिनंदन करेंगे जिसमें जनपद के पॉच व्यक्तियों को "आर्य रत्न", 10 व्यक्तियों को "आर्य भूषण" 10 व्यक्तियों को "आर्य गौरव" 10 व्यक्तियों को "आर्य श्रेष्ठ" व 10 महिलाओं को माता मदालसा, माता गार्गी व रानी लक्ष्मीबाई उपाधि से विभूषित किया जाएगा। यह पुरस्कार समाज सेवा, शिक्षा, संस्कार, दान यज्ञ व पर्यावरण की रक्षा के लिए विशेष कार्य करने वालों को दिए जाएंगे।

विराट कवि सम्मेलन में भावविभोर हुए श्रोता

यज्ञ महोत्सव 2018 के पांचवें दिन रात्रि में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया । इस भव्य कवि सम्मेलन में सर्वप्रथम आचार्य संजीव रूप ने वेद मंत्रों का गायन करके कवि सम्मेलन का शुभारंभ किया पश्चात मुख्य अतिथि श्रीमान डॉ अशोक रस्तोगी मुख्य सम्पादक आर्यावर्त केसरी अमरोहा ने दीप प्रज्वलित किया , पश्चात कुमारी वेदऋचा ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की और गीत पढ़ा- " मेरी भूमि भरत की जननी मेरा उस से नाता है/गंगा है पहचान हमारी तट अमृत छलकता है/रंग बिरंगी ओड़ रही है दुनिया अब अपनी चूनर/जिसकी चूनर केसरिया है मेरी भारत माता है।

इसके पश्चात सुमित माहेश्वरी ने यज्ञ महोत्सव के निर्देशक आचार्य संजीव रुप की सराहना करते हुए कहा- यज्ञ महोत्सव में आहुतियां डाल डाल/होकर विभोर सब तो अनन्य हो गए/आर्य संस्कारों में पगा पगा के व्यक्ति को/गुधनी के व्यक्ति व्यक्ति देव जन्य हो गए।

इसके पश्चात रस परिवर्तन करते हुए गाजियाबाद से पधारे डॉक्टर जयप्रकाश मिश्र ने अपने गीतों से सभी को हंसाते हुए कहा- खुशी है अब कि बालों का हुआ पूरा सफाया है/जब से हाथ बीवी ने मेरे सर पर घुमाया है।

कवियित्री कु० मुक्ति ने गीत पढ़ते हुए कहा- " जो कोई ना कर पाया नामुमकिन को मुमकिन कर हम दिखा देंगे/ अब तक वक्त ने चलाया सबको अपने वक्त से/उसी वक्त को अपने वक्त से चलना अब हम सिखा देंगे!

फिरोजाबाद से पधारे गीतों के राजा यशपाल यश ने अपने गीतों से लोगों की ढेर सारी तालियां बटोरी ,उन्होंने गीत पढ़ा-"वेदना के गले से मिली लक्षणा/गीत को मिल गई दर्द की दक्षिणा/चेतना साधना की सहेली बनी वेद मंत्रों में होने लगी मंत्रणा।

हास्य के महान कवि लटूरी लट्ठ ने 1 घंटे से ज्यादा लोगों को हंसाया और गुदगुदाया उन्होंने पड़ा- हमने तो रोटी मांगी थी बस दो जून की/वे कथाएं सुना रहे हैं हमें हनीमून की/प्यार के परिंदे तो आगरा में उड़ते हैं/क्यों तारीफ कर रहे हो देहरादून की।

डॉ अशोक रस्तोगी बिजनौर अफजलगड वालों ने सुनाया- तीखा है कड़वा है पर स्नेह की जलधार पिता/संतति के निर्माण में है कुशल कुंभकार पिता।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए आचार्य संजीव रूप ने कहा- "ना हम गालों पर मरते हैं ना हम बालों पर मरते हैं/अदाओं पर न बिलखाती हुई चालो पर मरते हैं/शिवाजी बंदा बैरागी भगत सिंह हमको प्यारे हैं/कट गए पर झुके न जो हम उन भालो पे मरते हैं।

सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे नरेंद्र गरल ने बेहतरीन ग़ज़ल सुना कर सभी को राष्ट्रभक्ति से ओत प्रोत कर दिया- मिली नफरत हो तो सीने में दफन कर लेना/आग अपनी हो पराई हो सहन कर लेना/देश अपना है सब अपने हैं कोई गैर नहीं/हर शहादत के लिए मन से नमन कर लेना।

कार्यक्रम में बिल्सी से नगर पालिका अध्यक्ष अनुज वार्ष्णेय, उझानी से प्रदीप गोयल ,बिसौली से सुभाष चंद्र अग्रवाल, इस्लामनगर से संजीव कुमार गुप्ता ,श्रवण कुमार आर्य, सिठौली से महेश कुमार सिंह महाराज सिंह बदायूं से श्रीमती शशि आर्य रामप्रकाश आर्य व सेकड़ों स्थानों से लगभग 2000 श्रोताओं की उपस्थिति देर रात 2:00 बजे तक बनी रही। कार्यक्रम के समापन पर सभी ने राष्ट्रगान किया ।

इस मौके पर अगरपाल सिंह, राजेन्द्र उपाध्याय संजयसिंह राकेश शाक्य, बद्री प्रसाद आर्य,व सैकड़ों संत भी मौजूद रहे।

समापन पर हुआ विशाल भण्डारा

आगामी वर्ष के लिए ऋग्वेद पारायण यज्ञ का शुभारम्भ

आर्य समाज गुधनी के यज्ञ महोत्सव 2018 का आज नए वर्ष के लिए यज्ञ व भंडारे के साथ समापन हो गया ।यज्ञ महोत्सव 2018 की विशेषताएं यह रहीं कि उत्सव में प्रथम दिन 211 वृक्ष लगाए गए ,जादूगर सम्मेलन के माध्यम से समाज में फैली हुई कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया गया ।,61 कुंडीय यज्ञ ढाई कुंटल गौ घी व तीन कुंटल सामग्री से करके पर्यावरण को शुद्ध किया गया। वेद सम्मेलन नारी सम्मेलन राष्ट्र रक्षा सम्मेलन भी किए गए जिनके माध्यम से समाज सुधार, नारी जाति के उत्थान व राष्ट्र के लिए सर्वस्व समर्पण की भावना का प्रचार किया गया।

आर्य वीर दल सम्मेलन में आर्य वीर दल गुधनी के बच्चों ने अनेक करतब दिखाए जो बच्चों व जवानों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक थे । विराट कवि सम्मेलन अत्यन्त सारगर्भित रहा। लगभग 20000 लोगों का विशाल भंडारा आयोजित किया गया जिसमें सैकड़ों स्थानों से श्रद्धालुओं ने आकर के प्रसाद चाचा। गुधनी खौंसारा ,बैरमई बुजुर्ग, बेटा गुसाई, जरावन ,भोजपुर, गड़रपुरा ,बिल्सी, सिरासौल, विसौली, वजीरगंज, बदायूं, दातागंज ,उसावॉ, भटौली, उझानी, इस्लामनगर, बबराला ,बहजोई, सम्भल आदि अनेक स्थानों से भ श्रद्वालु पधारें। नगर पालिका अध्यक्ष अनुज वार्ष्णेय, सीमा चौहान ,पूर्व विधायक श्री भारत सिंह यादव , अजीत सक्सेना दिनेश असावा आदि भी मौजूद रहे। भंडारे से पूर्व अगले वर्ष के लिए ऋग्वेद पारायण का शुभारंभ हुआ। आचार्य संजीव रूप ने यज्ञ का शुभारंभ कराते हुए स्वयं व अपने आर्य समाज के अधिकारियों के साथ ही संकल्प लिया कि यह यज्ञ प्रातः सायं पूरे वर्ष चलता रहेगा और इसकी पूर्णाहुति अगले यज्ञ महोत्सव में होगी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती और सूर्य सिद्धान्त

आचार्य दार्शनेय लोकेश

वैदिक समाज में सूर्यसिद्धान्त के प्रति कुछ भ्रान्तियां जड़ जमाये हुई हैं। यह लेख उन भ्रान्तियों को दूर करने का हमारा विनम्र प्रयास है। लोगों ने अपने आप ही मनमाने आक्षेप बना रखे हैं और उन के अन्तर्गत ही वे महर्षि के प्रति अपनी अवधारणाएं बनाये हुए हैं। ऐसी कुछ अवधारणाओं और उन पर अपना मंतव्य रखते हुए तथ्यों को स्पष्ट करना ही हमको अभीष्ट है।

अवधारणा सं० 1 – कि सूर्य सिद्धान्त लाटदेवकृत एक डुप्लीकेट और नकली ग्रन्थ है।

स्पष्टीकरण– सबसे पहले तो यह जानें कि सू०सि० लाटदेव जी का नही है। पञ्चसिद्धान्तिका में लाटदेव जी वस्तुतः रोमक और पौलिश सिद्धान्त के कर्ता कहे गये हैं (पंचसिद्धान्तिका 1.3)। सूर्य सिद्धान्त के सन्दर्भ से लाटदेव का नाम कहीं नहीं आता है।

अवधारणा सं० 2– कि जिस सू०सि० को महर्षि ने प्रामाणिक कहा है वह आज अनुपलब्ध है।

स्पष्टीकरण– यद्यपि यह सही तथ्य है कि सन् 505 के काल की रची गई वराहमिहिर कृत पञ्चसिद्धान्तिका में वर्णित सू०सि० के कुछ गणितीय तथ्य आज उपलब्ध सू०सि० से भिन्न हैं तथापि सैद्धान्तिक तौर पर कोई विशेष भिन्नता नहीं है। महर्षि के जन्म दिनांक 20 –09 –1825 से अभी तक मात्र 193 वर्ष ही हुए हैं। इतने अल्प काल में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थ का खो जाना वैसे भी विश्वसनीय कथन नहीं लगता। श्री रंगनाथ मिश्र की सू०सि० टीका शक 1525 अर्थात् सन् 1603 में लिखी गई है। यह, वही टीका है जो हमें आज उपलब्ध है।

मेरे स्वयं के पास सू०सि० की जो 2 टीकाएँ हैं, उनमें से एक इन्हीं आचार्य रंगनाथ मिश्र की है। विदेशी विद्वानों में बैली (1736–1793), बैन्टली (1825), बर्गसीज (1860) ने जिस सू०सि० पर, विस्तृत व्याख्या लिखी हैं, वह भी यही सू०सि० है जो आज हमें उपलब्ध है। अतः यह कहने या मानने का कोई कारण नहीं है कि सू०सि०, वर्तमान में हमें उपलब्ध है वह महर्षि को उपलब्ध नहीं था।

सोचने और समझने की बात है कि महर्षि जी से भी बहुत पहले की जो टीका हमें प्राप्त है, वही टीका भला उनको क्यों नहीं प्राप्त रही होगी?यह भी स्वाभाविक है कि जो ग्रन्थ स्वयं महर्षि को अनुपलब्ध रहा हो उसे प्रामाणिक मानने का तो महर्षि उपदेश करेंगे ही नही।

अवधारणा सं० 3– महर्षि द्वारा सूर्यसिद्धान्त को प्रामाणिक न मानने के कारण से ही महर्षि ने सृष्ट्यादि की काल गणना में 15 सन्धियों को नहीं लिया है।

स्पष्टीकरण– हालांकि इस विषय को हम अपने पाठकों को फिर, अलग से स्पष्ट करेंगे कि दिवसमान में (दिन रात्रि) 3, महायुग (चतुर्युगी) में 5 और चतुर्दश मन्वन्तरों में 15 संन्धियाँ क्यों व कैसे होती हैं। इससे अधिक और इससे कम संन्धियां नहीं हो सकती हैं। महर्षि जी ने संन्धियों के बारे में नकारात्मक रूप से कुछ भी नहीं लिखा है जबकि सूर्यसिद्धान्त का उल्लेख सर्वदा, स्वीकृति परक ही किया है। दिन (दिवस) में ष बार संध्या करने का जो नियम है उसका आधार सूर्य का उदय और अस्त होना है। तैत्तरीय अरण्यक ष्छ्छ के अनुसार उद्यन्तमस्तं यान्तमादित्यमभिध्यायेत् का प्रमाण स्वयं स्वामीजी ने भी दिया है।

सूर्यसिद्धान्त में काल गणना का विस्तार सन्धि युक्त ही है। अस्तु कोई सूर्यसिद्धान्त को तो स्वीकार करे और साथ ही सन्धियों को नकार करे, ऐसा अर्धजरतीय न्याय से ठीक नहीं है। सन्धि विहीन काल गणना की अवधारणा सूर्यसिद्धान्त के प्रति बहुत बड़ी भ्रान्ति है।

अवधारणा सं० 4– वशिष्ठ कृत सूर्यसिद्धान्त ही प्रामाणिक व वास्तविक सूर्यसिद्धान्त है।

स्पष्टीकरण– यह अवधारणा असत्य पर आधारित है। वसिष्ठ कृत सूर्यसिद्धान्त नाम से कोई सूर्यसिद्धान्त नहीं है। पञ्चसिद्धान्तिका में वर्णित पांच सिद्धान्तों में से एक है वशिष्ठ सिद्धान्त। वस्तुतः पञ्चसिद्धान्तिका में वसिष्ठ सिद्धान्त पर केन्द्रित एक विशेषण, ष.......परिशेषो दूरविभ्रष्टौ ष (पञ्चसिद्धान्तिका–1ध4) से वशिष्ठ सिद्धांन्त की अशुद्धता के सम्बन्ध में पर्याप्त विवरण मिल जाता है।

ज्योतिष के जिज्ञासु और कालगणना की सृष्टि संवत् में अभिरुचि रखने वाले महानुभावों के लिए उनकी आंख खोल देने वाले निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट किये जाने बहुत आवश्यक है। अस्तु –

1. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका वेदोत्पत्ति विषय से, '.......इति सूर्यसिद्धान्तादिषु संख्यायते अनया रीत्या वर्षादिगणना कार्येति' यहाँ महर्षि ने गणना करने हेतु सूर्यसिद्धान्त का यथोचित उल्लेख किया है। इस से स्पष्ट प्रमाणित होता है कि स्वामीजी सूर्यसिद्धान्त को मानक या प्रामाण्य ग्रन्थ समझते हैं। पुनः इसी ग्रन्थ के प्रमाण्याप्रमाण्यविषय अध्याय में क्या लिखते हैं, आप भी देखिए। ' .. ..अथर्ववेदश्च विश्वकर्मत्वष्ट्र (देवज्ञ) मय.तश्चतसृसंहिताख्यो ग्राह्यः।' ध्यान रहे कि केवल यही एक स्थान है जहाँ पर महर्षि जी ने 'मय' नाम के देवज्ञ (ज्ञातव्य है कि देवज्ञ ज्योतिर्विद को कहते हैं) का एक संहिताकार के रूप में नाम लिया है। इसके अतिरिक्त कहीं भी (भले या बुरे रूप में) महर्षि जी ने 'मय' का नाम लिया हो, हमारे संज्ञान में नहीं है। अगर किसी के संज्ञान में हो तो उन्हें तथ्य को सामने लाना चाहिए।

2. सत्यार्थ प्रकाश १ष सम्मुल्लास में, ' .... आप लोगों का बड़ा भाग्य है कि वेदमतानुयायी सूर्य सिद्धान्तादि ज्योतिष ग्रंथों के अध्ययन से ठीक–ठीक भूगोल, खगोल विदित हुए '। यहाँ भी महर्षि जी ने सूर्यसिद्धान्त को स्पष्टतया वेदमतानुयायी अर्थात आर्ष या प्रामाणिक माना है। ज्ञातव्य है कि महर्षि जी ने वेदों को स्वतः प्रमाण और अन्य सभी ग्रंन्थो का प्रमाण वेदाधीन माना है।

3. ग्रहों के प्रभाव परक परिणाम को स्वीकारते हुए भी, देखें कि कथित फलित ज्योतिष को नकारने में, महर्षि जी ने सत्यार्थ प्रकाश के 11वें समुल्लास में, कितनी सजगता से सूर्य सिद्धान्त और सिद्धान्तशिरोमणि का उल्लेख किया है। '....जो यह ग्रहण रूप प्रत्यक्ष फल है सो गणित विद्या का हैय फलित का नहीं। जो गणितविद्या है वह सच्ची और फलित विद्या स्वाभाविक संबंध को छोड़कर झूठी है। जैसे अनुलोम प्रतिलोम घूमने वाले पृथ्वी और चंद्र के गणित से स्पष्ट विदित होता है कि अमुक समय अमुक देश में सूर्य व चंद्र ग्रहण होगा। जैसे– छादयत्यर्कमिन्दुर्विधुं भूमिभारू। यह सिद्धांन्तशिरोमणि का वचन है। और इसी प्रकार सूर्य सिद्धांन्त आदि में भी है अर्थात जब सूर्य और भूमि के मध्य में चन्द्रमा आता है तब सूर्य ग्रहण और जब सूर्य और चन्द्र के बीच में भूमि आती है तब चन्द्र ग्रहण होता है। अर्थात् चंद्रमा की छाया भूमि पर और भूमि की छाया चन्द्रमा पर पड़ती है। सूर्य प्रकाशरूप होने से सम्मुख छाया किसी की नहीं पड़ती किंतु जैसे प्रकाशमान सूर्य व दीप से देहादि की छाया उल्टी जाती है वैसे ही ग्रहण में समझो।'

एक तथ्य और प्रस्तुत करना चाहूंगा। यद्यपि यह आज के विषय से सीधे–सीधे सम्बन्धित प्रतीत नहीं भी लग सकता है किन्तु है बहुत रोचक। शक 1420 के एक महान गणितज्ञ, लक्ष्मीदास जी ने भास्कराचार्य जी के सिद्धान्तशिरोमणि के गणित एवं गोलाध्याय पर टीका लिखी हैं। इस ग्रन्थ में सूर्य ग्रहण की गणना हेतु जो उदाहरण प्रस्तुत किया गया है उसमें शक संवत् 1420 को गत कलि 4599 लिया गया है। वर्तमान शक संवत् 1940 में से 1420 घटाएंगे तो 520 वर्ष का अन्तर आता है और यह 520 वर्ष का अन्तर अगर 4599 में जोड़ा जाएगा तो गत संवत् (वर्तमान का) 5119 आता है। और कोई भी देख सकता है कि यही मान, गत संवत् के रूप में, हमने भी अपने इस वर्ष के पंचांग में लिया है।

यहां पर, इसी गणना के पक्ष का, एक और तथ्य देना कदाचित अनुचित न होगा। पंडित रघुनन्दन प्रसाद शर्मा ने अपनी पुस्तक 'वैदिक संपत्ति' में इष्ट वर्ष 5030 अर्थात आज से 89 वर्ष पूर्व की तिथि के लिए संवत् संख्या 1972949030 ही दी हुयी है। वर्तमान विक्रम संवत् 2075 अर्थात् कलि गताब्द 5119 के लिए 1972949030 में 89 जोड़ देने पर 1972949119 (गत वर्ष) आ जाएगा जो कि हमारे आर्ष पत्रकम् में प्रकाशित गणना है। श्री शर्मा ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है, 'ब्रह्मा के एक दिन को कल्प अथवा सृष्टि समय कहते हैं।' खास बात तो ये भी है संकल्प के सारांश को उन्होंने भी, 'द्वितीयपरार्द्धे वैवस्तमन्वन्तरे....... ' की विधा से ही उद्घृत किया है। उन्होंने कल्पावधि के लिए वैदिक प्रमाण तो दिया ही है साथ युग गणना को ज्योतिषीय गणित का विषय भी बताया है। उन्होंने मन्वन्तरीय सन्धियों को भी गणना में लिया है और जो भी सन्दर्भ श्लोक उद्घृत किये हैं वे सब पूर्ब और अब तक प्राप्त सू०सि० से एक ही हैं। वैदिक पंचांग की सुप्रतिष्ठा हेतु उपरोक्त भ्रांतियों का निर्मूलन आवश्यक है।

सम्पादक एवं गणितक
श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्
(एक मात्र वैदिक पञ्चाङ्ग)
फोन सं० 01204271410

नोट– हमारे पास सत्यार्थ प्रकाश का आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट एवं ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का श्री घूड़मल प्रह्लादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास द्वारा प्रकाशित संस्करण है।

आर्यावर्त केसरी प्रकाशन समूह

विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवा के लिए प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित हैं

विश्व भर में वेद के प्रचार–प्रसार व महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को घर–घर पहुंचाने को संकल्पित आर्यावर्त केसरी विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवा के लिए देश–विदेश से प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित करता है। आवेदन संक्षिप्त जीवनवृत्त के साथ दिनांक 15 सितम्बर 2018 तक पहुंच जाने चाहिए। (आवेदन हिन्दी भाषा में ही स्वीकार किये जाएंगे)। पुरस्कारों की घोषणा 01 अक्टूबर 2018 तक की जाएगी। पुरस्कार इस प्रकार हैं–

- **अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वैदिक हिन्दी भाषा व भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार में अमूल्य योगदान प्रदान करने पर– अन्तर्राष्ट्रीय आर्यरत्न पुरस्कार।**
- **राष्ट्रीय स्तर पर वेद के प्रचार–प्रसार, समाज–सेवा के लिए– राष्ट्रीय आर्यावर्त भूषण पुरस्कार।**
- **निःशक्त, गरीब, अनाथ, व गुरुकुलों की उत्कृष्ट सेवा व दानशीलता के लिए– आर्यावर्त सौम्या दानवीरश्री पुरस्कार।**
- **वैदिक साहित्य के विद्वान लेखक, कवि व पत्रकार के लिए– आर्यावर्त कलमश्री पुरस्कार।**
- **युवा लेखक, कवि, गायक, पत्रकार, समाजसेवी के लिए– आर्यावर्त युवा गौरव पुरस्कार।**

आवेदन भेजने का पता : सम्पादक– आर्यावर्त केसरी
निकट– मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)-244221
☎ फोन : 05922-262033, 09412139333
ई-मेल : aryawartkesari@gmail.com

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

- **रामायण का वास्तविक स्वरूप**, पृष्ठ-80, मूल्य-20/-
- **अर्चना यज्ञ पद्धति**, पृष्ठ-48, मूल्य-15/-
- **यज्ञ पद्धति**, पृष्ठ-120, मूल्य-35/-
- **बन्दा वैरागी** (कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत), पृष्ठ-64, मूल्य-16/-
- **पं. प्रकाशवीर शास्त्री** (डॉ. अशोक आर्य), मूल्य- 200/- सैकड़ा
- **तारा टूटा** (वीरेन्द्र कुमार राजपूत), पृ0-52, मूल्य- 14/-
- **परिधियों के स्पर्श/यात्रा-यात्रा अन्तःयात्रा** (कवि प्रो. विजय कुलश्रेष्ठ), पृष्ठ-112, मूल्य-80/-
- **प्रो. विजय कुलश्रेष्ठ- हीरक जयंती उत्सव ग्रन्थ**, मूल्य-200/-
- **सत्यार्थ प्रकाश**, (महर्षि दयानन्द), पृ.-480 (सजिल्द), मूल्य-150/-
- **आर्य कन्या की सूझबूझ**, मूल्य- 8/-
- **हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आर्यसमाज का योगदान,** मूल्य-5/-
- **यज्ञ और पर्यावरण**, मूल्य-5/-
- **दयानन्द सप्तक**, मूल्य-5/-
- **ब्रह्मराशि**, मूल्य-5/-
- **आर्यसमाज** (राष्ट्र कवि रामधारी सिंह 'दिनकर') मूल्य-8/-
- **सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें?**मूल्य-1/-
- **गौकरुणानिधि** (महर्षि दयानन्द), मूल्य- 8 रुपये
- **आर्यसमाज की मान्यताएं** (महर्षि दयानन्द), मूल्य- 8 रुपये
- **आर्योद्‌देश्य रत्नमाला** (महर्षि दयानन्द), मूल्य- 8 रुपये
- **महर्षि दयानन्द की विशेषताएं** (म. नारायण स्वामी), मूल्य-8/-
- **नीतिशतक** (रामकुमार धनुर्धर), मूल्य- 20 रुपये
- **पुरुष-सूक्त** (महर्षि दयानन्द), मूल्य- 20 रुपये
- **दयानन्द लघुग्रन्थ सुंग्रह,** पृष्ठ- 212, मूल्य- 60 रुपये
- **मानव कल्याण निधि** (पं0 महेन्द्र आर्य), मूल्य- 100 रुपये
- **कर्तव्यवाद** (लक्ष्मीनारायण जिज्ञासु), मूल्य- 14 रुपये
- **अन्त्येष्टि कर्मविधि** (महर्षि दयानन्द प्रणीत), मूल्य- 8 रुपये
- **आर्य पर्व पद्धति** (14 पर्वों के मंत्रों सहित), मूल्य- 25 रुपये
- **प्रखर राष्ट्रचेता- महर्षि दयानन्द**, मूल्य- 8 रुपये
- **प्रखर राष्ट्रचेता- स्वामी श्रद्धानन्द**, मूल्य- 8 रुपये
- **प्रखर राष्ट्रचेता- लाला लाजपत राय**, मूल्य- 8 रुपये
- **प्रखर राष्ट्रचेता- वीर सावरकर**, मूल्य- 8 रुपये
- **प्रखर राष्ट्रचेता- स्वामी विरजानन्द**, मूल्य- 8 रुपये
- **प्रखर राष्ट्रचेता- महात्मा हंसराज**, मूल्य- 8 रुपये
- **प्रखर राष्ट्रचेता- गुरुदत्त विद्यार्थी**, मूल्य- 8 रुपये
- **प्रखर राष्ट्रचेता- लेखराम**, मूल्य- 8 रुपये
- **आर्यसमाज की विचारधारा**, मूल्य- 5 रुपये
- **अथर्ववेद काव्यार्थ- चार भागों में**, (कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत) चारों भागों का कुल मूल्य-500/-

पुस्तकों की खरीद पर विशेष छूट तथा नाम के प्रकाशन की सुविधा उपलब्ध है। वैदिक साहित्य को जन-जन तक पहुंचाएं। —प्रकाशक (09412139333)

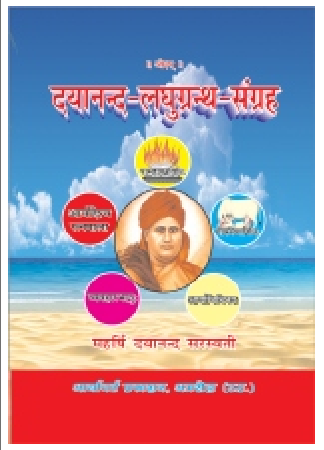

अवश्य पढ़ें - आज ही मंगाएं

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित संग्रहणीय पुस्तक

दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह

इसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत इन पांच पुस्तकों का संग्रह है-

- पंचमहायज्ञविधि
- आर्योद्‌देश्यरत्नमाला
- गोकरुणानिधि
- व्यवहारभानु
- आर्याभिविनयः

पृष्ठ : 212, मूल्य : 60/- रुपये

पुस्तकें वी०पी०पी०, रजिस्टर्ड डाक, रेलवे तथा ट्रांस्पोर्ट से भेजी जा सकती हैं। अधिक मंगाने पर विशेष छूट उपलब्ध है।

पता- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) सम्पर्क सूत्र : 09412139333

दयानन्द लघु ग्रन्थसंग्रह

आर्यावर्त प्रकाशन द्वारा प्रकाशित तथा आर्यसमाज के संस्थापक **महर्षि दयानन्द सरस्वती** द्वारा लिखित **'पंचमहायज्ञविधिः', 'आर्योद्‌देश्य रत्नमाला', 'गो करुणानिधिः', 'व्यवहारभानुः'** तथा **'आर्याभिविनयः'** नामक पांच लघु एवं वृहद् ग्रन्थों के संग्रह के रूप में यह पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसका सम्पादन आर्यजगत की विशिष्ट विभूति स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती ने किया है। महर्षि दयानन्द कृत यह पुस्तक विषयवस्तु, कलेवर, मुद्रण व प्रस्तुतिकरण आदि सभी दृष्टियों से संग्रहणीय तथा पठनीय है।

पुस्तक का नाम : दयानन्द लघु ग्रन्थसंग्रह
लेखक : महर्षि दयानन्द सरस्वती
कुल पृष्ठ संख्या : 212
मूल्य : 60/–
पुस्तक प्राप्ति का पता : आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ0प्र0)– 244221, दूरभाष– 9412139333
(समी.– प्रदीप वर्मा, सम्भल)

पुस्तक समीक्षा

साहित्य समीक्षा : नियमित स्तम्भ

आर्यावर्त केसरी के इस नियमित स्तम्भ में आर्य जगत के विद्वान लेखकों तथा रचनाकारों की बहुमूल्य कृतियों की समीक्षाएं प्रकाशित की जाती हैं ताकि उनके विषय में जिज्ञासु पाठकों, मननशील शोधार्थियों, मनीषियों तथा विभिन्न धार्मिक सामाजिक, सांस्कृति व शैक्षणिक संस्थाओं को उपयोगी जानकारी मिल सके। इस दृष्टि से इस स्तम्भ में विद्वान, रचनाकारों तथा प्रकाशकों की कृतियों का स्वागत है। एतदर्थ उनसे अनुरोध है कि किसी भी पुस्तक की समीक्षा हेतु उसकी न्यूनतम दो प्रतियां अग्रांकित पते पर भेजने का कष्ट करें। धन्यवाद,

डॉ. बीना रुस्तगी, साहित्य सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221

अथ गोकरुणानिधि

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत यह लघु पुस्तिका **'अथ गोकरुणा निधिः'** आर्यावर्त प्रकाशन द्वारा प्रकाशित की गयी है, जो निश्चय ही एक संग्रहणीय कृति है।

इसके लेखन द्वारा ऋषि ने सारे संसार के समक्ष गौ की महत्ता का वर्णन कर, महती उपकार किया है। वैदिक साहित्य में 'गावो विश्वस्य मातरः' अर्थात् गाय सबकी माता है, का उद्घोष किया गया है। गो का दुग्ध पौष्टिक होता है। हमारे साहित्य में पंचगव्य की महत्ता का विषद् उल्लेख है। गोमूत्र का औषधियों में प्रयोग होता है। गोबर, दही, दूध, घृत आदि सब औषधियों के रूप में काम आते हैं, जिनका उपयोग राजयक्ष्मा, कैंसर, अल्सर, मानसिक, शारीरिक रोगों में किया जाता है। दुख की बात है कि आज गौएं बूचड़खानों में जा रही हैं, यह हमारा दुर्भाग्य है। यह लघु पुस्तिका जन-जन तक पहुंचनी चाहिए, ताकि गोसंरक्षण को दिशा मिल सके।

पुस्तक का नाम : अथ गोकरुणानिधि
लेखक : महर्षि दयानन्द सरस्वती
कुल पृष्ठ संख्या : 16, मूल्य : 8/–
पुस्तक प्राप्ति का पता : आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ0प्र0)– 244221, दूरभाष– 9412139333
(समीक्षक– चित्रा गोयल, अमरोहा)

आजादी की दूसरी लड़ाई

आपातकाल के समय दिनांक 25 जून 1975 से 21 मार्च 1977 तक लोकतंत्र के संरक्षण के लिए जो संघर्ष हुआ, उसी के परिप्रेक्ष्य में जनपद बिजनौर के लोकतंत्र रक्षक सेनानी स्मारिका 'आजादी की दूसरी लड़ाई' का प्रकाशन धामपुर (बिजनौर) निवासी श्री शिवकुमार जी के लेखन व सम्पादन से हुआ है, जो आर्यावर्त प्रकाशन से छपी है। यह स्मारिका विषयवस्तु, कलेवर, स्वरूप, दिशा व संदेश आदि विभिन्न दृष्टियों से न केवल पठनीय, संग्रहणीय व ग्राह्य है, वरन् आगे आने वाली पीढ़ियों के समक्ष उस गौरवपूर्ण इतिहास का भी यथार्थ चित्रण करने में समर्थ है, जिसमें उस युग की भीषण यातनाओं, शासन व प्रशासन की क्रूरताओं के सामने अपने सुख-वैभव का परित्याग करते हुए अपने परिवार, यहां तक कि अपने प्राणों की भी परवाह किए बिना हमारे लोकतंत्र रक्षक सेनानियों ने अपने गौरवशाली संघर्ष, पुरुषार्थ, बलिदान व सर्वस्व समर्पण से एक नये युग का श्रीगणेश किया। यह स्मारिका आगे आने वाली पीढ़ी का पथ प्रशस्त करेगी तथा सत्ता के मद में चूर शासन व प्रशासन द्वारा जिस प्रकार लोकतांत्रिक मूल्यों का हनन, संवैधानिक आस्थाओं का अतिक्रमण व भारतीय सांस्कृतिक विरासत व परम्पराओं का उल्लंघन किया गया और अमानवीय यातनाओं, व उत्पीड़न से जिस प्रकार क्रूरता का परिचय दिया गया, उसका वास्तविक चित्र भी प्रस्तुत करेगी। इस स्मारिका के प्रथम परिशिष्ट में संदेश तथा आपातकाल संबन्धी महत्वपूर्ण आलेख हैं। जबकि परिशिष्ट-2 में उन लोकतंत्र रक्षक सेनानियों का परिचय है, जिन्हें शासन द्वारा मान्यता व सुविधा दी गयी, और परिशिष्ट-3

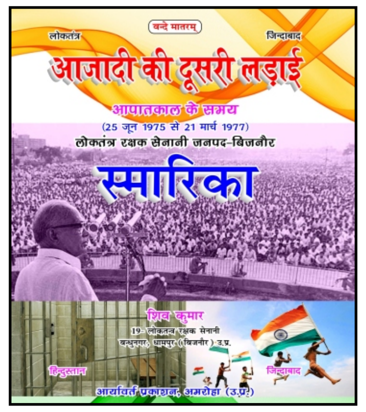

में उन लोकतंत्र रक्षक सेनानियों का परिचय है, जिन्हें शासन ने मान्यता नहीं द, किंतु वे डीआइआर व मीसा के अन्तर्गत बन्दी रहे। वास्तव में इस स्मारिका के लेखन व सम्पादन हेतु श्री शिवकुमार जी विशेष धन्यवाद के पात्र हैं! देश के प्रत्येक जनपद में ऐसी स्मारिका प्रकाशित होनी चाहिए।

पुस्तक का नाम : आजादी की दूसरी लड़ाई
लेखन/ सम्पादन : शिवकुमार
कुल पृष्ठ संख्या : 116, मूल्य : 100/–
पता : श्री शिवकुमार, 19– लोकतंत्र रक्षक सेनानी, बन्धुनगर, धामपुर (बिजनौर), उ0प्र0, दूरभाष– 9412669370, 8433051059
(समीक्षक– सूर्यकान्त सुमन, धामपुर)

विश्व पटल पर बढ़ता योग का वर्चस्व

डॉ0 यतींद्र कटारिया विद्यालंकार – डॉ0 रूबी सिंह

भारत ने विश्व को आध्यात्मिक, दार्शनिक तथा वैज्ञानिक क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया है। शून्य की तरह विश्व को भारत की सबसे बड़ी देन योग को माना जा रहा है। दरअसल योग एक विचार ही नहीं बल्कि एक संपूर्ण जीवन पद्धति है, जिसमें भारतीय जीवन मूल्य यानी संस्कृति समाहित है। शून्य के आधार पर आधुनिक विज्ञान स्थापित हुआ, उसी तरह आधुनिक जीवन का आधार बनता जा रहा है योग।

योग शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक एवं जीवनीय ऊर्जा का संवाहक है। योग जीवन शैली बदलकर यहां तक कि जलवायु परिवर्तन से निपटने में दुनिया की मदद कर सकता है। याद रहे कि जलवायु परिवर्तन की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि लोगों में जो गुस्सा देखा जा रहा है और विश्व भर में तेजी से जो आत्महत्याएं बढ़ रही है, उसका एक कारण बदलती जलवायु व अनियंत्रित जीवन शैली है। दुनिया ने इसे समझा और इसके समाधान के लिए उचित साधन के रूप में योग को स्वीकार किया है। योग में मानवता को एकजुट करने की अद्‌भुत शक्ति है, क्योंकि योग में ज्ञान कर्म और भक्ति का समन्वय एवं समागम निहित है। योग का शाब्दिक अर्थ है जोड़ना। चाहे किसी भी देश, जाति, धर्म–सम्प्रदाय के व्यक्ति हों, योग सभी में सुस्वास्थ्य एवं सकारात्मक सोच विकसित करता है। योग सामाजिक विषमताओं, मन की निर्बलताओं तथा अनेकों असाध्य व्याधियों से मुक्ति का सबसे सरल, सहज एवं प्रभावी साधन है। योग व्यक्ति निर्माण से विश्व निर्माण का द्योतक है तथा मानव चेतना का विज्ञान है। प्रसिद्ध योगनिष्ठ एवं पतंजलि योगपीठ के संस्थापक सदस्य स्वामी कर्मवीर का उद्‌घोष भी इस संबंध में प्रासंगिक है। जिसमें उन्होंने योग युक्त मानव, रोग मुक्त मानव का नारा दिया है।

निःसन्देह तनाव, अवसाद, अशांति व तृष्णाओं से मुक्ति एवं शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य तथा आत्म परिष्कार के लिए योग हर व्यक्ति के लिए सबल साधन के रूप में आत्मसात किया जा रहा है। कभी केवल संतो एवं ग्रंथों तक सीमित रहने वाला योग अपनी वैश्विक महत्ता से दिन प्रतिदिन अत्यंत लोकप्रिय होता जा रहा है। 21 जून को मनाया जाने वाला विश्व योग दिवस योग प्रेमियों के लिए वैश्विक पर्व का रूप धारण कर चुका है। योग को विज्ञान के रूप में, सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना के रूप में तथा वैश्विक सद्‌भावना व सुस्वास्थ्य के रूप में निरन्तर आत्मसात करने की वृद्धि हो रही है। योग के बढ़ते प्रभाव एवं उसकी उपयोगिता से प्रतिदिन दुनिया भर में करोड़ों लोग लाभान्वित हो रहे हैं, लेकिन यहां यह भी विचारणीय है कि योग जो कि शाश्वत मानव कल्याण निधि है, कहीं यह व्यवसायिक विषय ना बन जाए। इसलिए आवश्यक है कि योग की मौलिकता एवं योग के उद्देश्य का ध्यान रखना भी अपेक्षित है। महर्षि पतंजलि के योग दर्शन में वर्णित योग के विशद स्वरुप अष्टांग योग के बारे में जानना भी आवश्यक है। पतंजलि ने योग की संपूर्णता को आठ भागों यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि के रूप में परिभाषित किया है। योग के प्रथम सोपान यम के अंतर्गत अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य का विधान है जबकि दूसरे सोपान नियम के अंतर्गत शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय एवं ईश्वर प्रणिधान आते हैं। कदाचित यह भी विडंबनापूर्ण बात है कि योग के नाम पर चल रही तमाम दुकानों व योग गुरुओं के नाम पर गुरुडम कर रहे योग व्यवसायियों ने योग का बाजारीकरण करने को योग को केवल आसन एवं प्राणायाम तक सीमित कर इसे लघुपाश में बद्ध करने का प्रयास किया है। इसमें न सिर्फ योग की मौलिकता खंडित हो रही है बल्कि यम नियम के बगैर तो योग का उद्देश्य भी पूर्ण नहीं हो सकता है। हालांकि आसन, प्राणायाम से शरीर व मन की शुद्धि व स्वास्थ्य की वृद्धि की जा सकती है पर योग की सम्पूर्णता अष्टांग योग में ही है।

आज योग निराश और हताश मानवता को उत्साह, आनंद व ऊर्जा प्रदान कर एक आशा की परिणीति के रूप में अंगीकार किया जा रहा है और यही कारण है कि 21वीं सदी योग सदी का पर्याय बन रही है। योग स्वास्थ्य एवं चिकित्सा का प्रतीक होने के साथ–साथ सामाजिक संबंधों में मजबूती, प्राणी मात्र के कल्याण की भावना, प्र.ति के प्रति प्रेम तथा विश्वबन्धुत्व का संवाहक भी है, इसी के चलते तेजी से न सिर्फ भारत अपितु पाश्चात्य जगत और यहां तक की बड़ी संख्या में इस्लामिक देश योग की महत्ता को स्वीकार कर इसे आत्मसात कर रहे हैं। पाश्चात्य जगत में जहां विक्रम ठाकुर का विक्रम योग, बी. के. एस. आयंगर का आयंगर योग, कनाडा में आचार्य संदीप का फ्रीडम योग, अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी का शिल्पा योग, स्वामी रामदेव का योग विज्ञान, स्वामी कर्मवीर का शाश्वत योग विश्व भर में लोकप्रिय होता जा रहा है। हालांकि आचार्य शंकर के बाद 19वीं सदी तक योग गुप्त विद्या ही रहा तथा नाथ योगी व महात्माजन आत्मकल्याण व सिद्धि प्राप्ति के लिए योग तप से धन्य होते रहे हैं। लेकिन दुनिया को वेदों की ओर लौटने का आह्वान करने वाले परम योगी व आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद ने जन जन तक वेदों का प्रचार प्रसार कर सिद्ध योगी के रूप में उनकी सिद्धियां व तप से योग की लोकप्रियता में वृद्धि को नव आयाम मिला। तदंतर स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविंद योगी, स्वामी शिवानंद सरीखे योग विभूतियों ने योग को विश्व पटल पर पहुंचाने का काम किया। महर्षि महेश योगी, आचार्य रजनीश तथा बौद्ध धर्म ने भी योग को वैश्विक आयाम प्रदान किया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जहां जीवन उन्नति का मूल मंत्र योग को मानते थे, वही देश के पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह राष्ट्रपति भवन में पूर्व सांसद व योग मर्मज्ञ रामचन्द्र विकल से योग शिक्षा प्राप्त करते रहे। वही एपीजे अब्दुल कलाम ने स्वामी रामदेव, आचार्य कर्मवीर का विधिवत योग सत्र आयोजित कर राष्ट्रपति भवन में योग महात्म्य का गुणगान किया।

योग धर्म एवं संप्रदायों की वर्जनाओं तथा संकीर्ण विद्रूपताओं की सीमाओं से परे की विषय वस्तु है जो इन सीमाओं व अवरोधों को लांघकर विश्व के कोने कोने में स्वास्थ्य, सद्‌भाव, शांति व मैत्री का संचार कर भारतीय संस्कृति का डिंडिम उद्‌घोष कर रहा है। योग के जरिए किस प्रकार भारत की सभ्यता व संस्कृति का प्रसार दुनिया के हर कोने में हो रहा है, यह इस आंकड़े को देखकर पता लगता है। भारत ने जब योग को विश्व दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र संघ में रखा तो योग को स्वीकार करने वाले देशों में उत्तरी अमेरिका के 23, दक्षिण अमेरिका के 11, यूरोप के 42, एशिया के 40, अफ्रीका के 46 एवं अन्य 12 देश शामिल है। गौर करने वाली बात तो यह है कि ईरान, पाकिस्तान और अरब समेत कुल 47 इस्लामिक देशों ने भी योग के महत्व को समझा और स्वीकार किया। योग एलाइन्स की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2016 में अमेरिका में 3 करोड़ 60 लाख लोग योग से स्वस्थ रहने के तरीकों को अपना रहे हैं। इसी रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका के 90 प्रतिशत लोग योग के बारे में जानते हैं, जबकि वर्ष 2012 में 70 प्रतिशत अमेरिकी योग के बारे में जानते थे। कमोबेश योग की तेजी से बढ़ती लोकप्रियता का दायरा ऐसा ही लगभग देश का होता जा रहा है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा सहित अनेकों नामचीन हस्तियां योग को आत्मसात कर लाभ प्राप्त कर रही हैं।

योग से आश्चर्यजनक लाभ व आत्म परिष्कार का होना उसकी व्यापकता वह भव्यता को निरंतर बढ़ा रहा है। गीता में वर्णित योग की परिभाषा योगः कर्मसु कौशलम् के अनुसार योग प्रत्येक क्षेत्र के कार्यों में शुचिता से कुशलता का परिचायक है। वही गीता में ही योगेश्वर श्री .ष्ण द्वारा अर्जुन को योग के उपदेश देते हुए कहा गया है समत्वं योग उच्यते अर्थात ऊंच–नीच, मेरा–पराया, हानि–लाभ तथा यश–अपयश से ऊपर उठकर समत्व भाव से बड़े हृदय के साथ जीना ही योग है। यह सूक्तियां योग द्वारा विश्व को शांति व समानता का संदेश देने में समर्थ है, जिसकी आज संपूर्ण विश्व को व्यापक जरूरत भी है।

योग विश्व को भारत की वसुधैव कुटुंबकम् की भावना का संदेश पहुंचाने में सक्षम रहा है तभी तो योग को पूरा विश्व पूरी उदारता के साथ अंगीकार कर रहा है। विश्व पटल पर योग का बढ़ता वर्चस्व जहां भारत की बड़ी सांस्.तिक विजय है वही योग मनीषियों को यह भी ध्यान रखना जरूरी हो जाता है कि योग शाश्वत परंपरा के रूप में अपनी मौलिकता एवं उद्देश्य को भी बनाए रखें।

– सदस्य हिंदी सलाहकार समिति
श्रम मंत्रालय भारत सरकार
संपर्क सूत्र –
मोहल्ला महादेव, थाना रोड, मंडी धनौरा, जिला अमरोहा उत्तर प्रदेश
पिन कोड – 244231
चलभाष– 9412634672
मेल आई.डी.
yatigk@gmail.com

योग भगाए रोग

हृदय एवं फेफड़ों को सबल बनाता है

नौकासन

विधि :–

1. दोनों हाथों को जंघाओं के ऊपर रखकर सीधें लेटें। अब श्वास अन्दर भरते हुए पहले सिर एवं कन्धों को ऊपर उठाएं फिर पैरों को भी ऊपर उठायें। हाथ, पैर एवं सिर समानान्तर नाव की तरह उठे हुए हों।

2. इस स्थिति में कुछ समय रूककर धीरे–धीरे हाथ पैर एवं सिर को भूमि पर ले जाएं। इस प्रकार से 3 से 6 बार तक आवृत्ति कर सकते हैं।

लाभ :–

1. इसके भी लाभ उत्तानपादासन के समान हैं।

2. हृदय एवं फेफड़े भी प्राण वायु के प्रवेश से सबल बनते हैं।

3. आंत्र, आमाशय, अग्न्याशय एवं यकृत आदि के लिये उत्तम है।

आओ योग करें

इस स्तंभ के अन्तर्गत योग–ऋषि स्वामी रामदेव जी द्वारा प्रस्तुत योग संबन्धी सामग्री नियमित रूप से प्रकाशित की जाएगी। आशा है कि इस स्तम्भ से पाठकगण लाभान्वित होंगे और योग को अपनी जीवनशैली बनाकर 'योग युक्त विश्व- रोग मुक्त विश्व' की ओर उद्यत होंगे। –सम्पादक

ऋग्वेद दोहावली

प्रथम मण्डल, सूक्त-१, मंत्र ५ से ९ तक

वीरेन्द्र कुमार राजपूत

ऋक् के रंगों से रंगी, दोहों की हर रेख।
इनमें प्रभु के लेख को, देख सके तो देख।।
प्रभु क्रान्तदर्शी, प्रभु होता, सत्य-स्वरूप।
दिव्य-गुणी से मिलते वह धारक कीर्ति अनूप।।5।।
अपने समर्पक का प्रभु करते हैं कल्याण।
रहा सत्य-व्रत है यही करते उसका त्राण।।6।।
हे प्रभु! हम प्रत्येक दिन बनें उपासक तोर।
प्रात: सायं पूजा करें बांधें प्रेम की डोर।।
बुद्धि पूर्वक कर्मों को करने की हो टेव।
उनको अर्पित आपको कर देवें प्रभु-देव।।7।।
सहस्र सूर्यों की दीप्ति सम आभित हैं प्रभु-देव।
यज्ञ तथा सत्कर्म की रक्षा उनकी टेव।।
वही व्यवस्थापक तथा वही प्रशासक देव।
अपने थल में रहते हैं वर्धमान स्वमेव।।
सब सत् विद्याएं हुईं उनसे ज्योति-मान।
स्तोता जिन से किया, करते उनका ध्यान।।8।।
रहे सुगमता पूर्वक, सदा निकट वह आप।
यथा निकट निज पुत्र के, रहता आया बाप।।
हे प्रभु! संगति कीजिए, हमसे स्वस्ति हेतु।
रहकर हम सबके निकट, देते रहिए चेतु।।9।।

-देहरादून
मोबा० : ९४१२६३५६९३

लाडली बिटिया

डॉ० अशोक रस्तौगी

भीनी गन्ध उड़ाती है, कभी तितली सी उड़ जाती है!
सदा लाडली मेरी बिटिया, घर आंगन महकाती है!!
कभी फूल सी इठलाती है, फिर पंकज बन जाती है!
कांटा सी नहीं चुभती, पांखुरी बन जाती है!
पराग सी खुशबू उड़ाती है, कोने-कोने में छा जाती है!!
सदा लाडली मेरी बिटिया, घर आंगन महकाती है!!
साज बनती है, तो कभी संगीत बन जाती है!
गजल बनती है, तो कभी गीत बन जाती है!
कथा कभी बनती है बेटी , फिर कविता बन जाती है!!
सदा लाडली मेरी बिटिया, घर आंगन महकाती है!!
खिल जाता उसकी हंसी से, घर का कोना-कोना!
मानती है कर्त्तव्य अपना, बिखरी हर वस्तु संजोना!
कमनीय कोमल सा शरीर लिए, पर्वत बन जाती है!!
सदा लाडली मेरी बिटिया, घर आंगन महकाती है!!
पढ़ती रहती सतत, फिर लिखने भी लगती है!
और कभी तो पूरी रात, वह जागती मिलती है!
नयन मूंद लेती है बेटी, फिर थककर सो जाती है!!
सदा लाडली मेरी बिटिया, घर आंगन महकाती है!!
सबका सत्कार वह करती है, सम्मान लुटाती है!
कभी बोझ नहीं बनती, स्वयं सब बोझ उठाती है!
नेह का दरिया बन जाती है, प्रेम का रस बरसाती है!!
सदा लाडली मेरी बिटिया, घर आंगन महकाती है!!
सोचता हूं! एक दिन, मेरा मस्तक ऊँचा करेगी वह!
ऊपर उठेगी, इतना उठेगी, आसमान छुएगी वह!
मेरी आंखें नम हो जाती हैं, जब वह विश्वास दिलाती है!!
सदा लाडली मेरी बिटिया, घर आंगन महकाती है!!

-अफजलगढ़, बिजनौर (उ०प्र०)

शराब से हानियां

शराब से घटती मनुष्य की आब, कहता आया सारा जमाना।
शराब से नष्ट होते देखे राजा और नवाब, बताता इतिहास पुराना।।
यादवों ने पी थी शराब, हो गये नष्ट भ्रष्ट और खराब।
पृथ्वीराज ने अय्याशी में पी थी शराब, आ घुसे विदेशी बन बैठे नवाब।।
तभी से आये देश के दुर्दिन, सिके मुश्किल है बताना।
शराब से घटती मनुष्य की आब, कहता आया सारा जमाना।।
शराब पीने की पड़ा जाए जिसको बाण, बन जाता वह निर्धन और कर्जवान।
होते दुखी पत्नी और सन्तान, मिट जाता समाज में मान और सम्मान।।
छूट जाता सब रिश्तेदारों व मित्रों से आना-जाना।
शराब से घटती मनुष्य की आब, कहता आया सारा जमाना।।
यदि चाहते हो घर और देश बने 'खुशहाल', छोड़ दो शराब पीने का ख्याल।
वैदिक धर्म के अनुसार चाल, बना रहेगा तुम्हारा जीवन सुखी और न होगे कभी कंगाल।।
बन जाएगा तेरे घर और परिवार का सुन्दर ताना-बाना।
शराब से घटती मनुष्य की आब, कहता आया सारा जमाना।।

-खुशहाल चन्द आर्य, गोविन्दराम आर्य एण्ड संस, १८०- महात्मा गांधी रोड (दोतल्ला)
कोलकाता-७००००७, मोबा० : ९८३०१३५७९४

वैदिक विद्वान अभिमन्यु कुमार खुल्लर सम्मानित

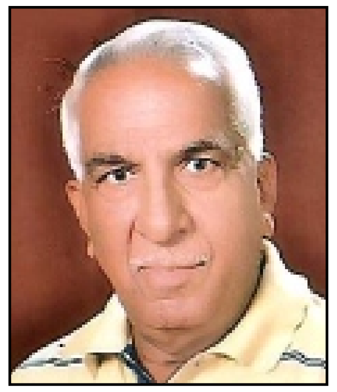

ग्वालियर (म०प्र०)। आर्य समाज द्वारा आयोजित समारोह में चण्डीगढ़ के पंचकुला स्थित परेड ग्राउण्ड में ग्वालियर निवासी वैदिक साहित्य के यशस्वी लेखक अभिमन्यु कुमार खुल्लर को 'वैदिक विद्वान' अभिहित करते हुए वैदिक सिद्धांतों व मूल्यों के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिये सम्मानित किया गया। मानपत्र, 31 हजार का चैक व बहुमूल्य मश्मीना शाल प्रदान किया गया। परेड ग्राउण्ड में लगभग 15 हजार गणमान्य नागरिक जन, डी0ए0वी0 स्कूल व कालेजों के शिक्षक, प्राचार्यगण, विद्यार्थीगण सम्मिलित थे। इस दुर्लभ, अनमोल अवसर के लिए ऋषि-समर्पण की 3 हजार प्रतियों का विशेष संस्करण खुल्लर जी ने उपलब्ध कराया। महात्मा हंसराज साहित्य के अतिरिक्त ऋषि-समर्पण की एक हजार प्रतियां अग्रिम पंक्ति में बैठे गणमान्य जन को उपलब्ध करायी गयीं। कार्यक्रम अत्यन्त भव्य रहा।

वैदिक विद्वान श्री खुल्लर को वर्ष 2016 में आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई ने आर्य समाज स्थापना दिवस, गुडीपड़वा पर विश्व की प्रथम आर्य समाज काकड़वाड़ी में 'वैदिक विद्वान' के रूप में सम्मानित किया था। अंगवस्त्र, स्मृति चिह्न, हैदराबादी मोतियों के हार, मानपत्र व 25 हजार की धनराशि भेंट की गयी थी। यह सम्मान भी ग्वालियर या मध्यप्रदेश के किसी अन्य विद्वान को प्राप्त नहीं हुआ। श्री खुल्लर जी की ऋषि-तर्पण, ऋषि-अर्पण और ऋषि-समर्पण तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और निर्मूल्य जनता-जनार्दन को उपलब्ध करायी गयी हैं। चौथी पुस्तक ब्रह्मर्षि-प्रसाद प्रेस में है, जो शीघ्र ही प्रकाशित होने की सम्भावना है।

वार्षिकोत्सवों, आर्य पर्वों तथा विभिन्न कार्यक्रमों में भजनोपदेश के लिए सम्पर्क करें

पं. घनश्याम प्रेमी आर्य

ग्राम- मुस्तफाबाद, पो०- जानसठ
जि०- मुजफ्फरनगर (उ०प्र०)- 251314
चलभाष : 09927728710

आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा

ट्रैक्ट, लघु पुस्तक, संदर्भ ग्रन्थ, काव्य संग्रह तथा बहुरंगी पैम्फलेट, पोस्टर, विजिटिंग कार्ड आदि के प्रकाशन की उचित मूल्य पर सुविधा उपलब्ध है।

-व्यवस्थापक, आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, अमरोहा
मोबा. : 9412139333

आर्ष साहित्य बिक्री केन्द्र

समस्त प्रकार का आर्ष साहित्य- वेद, उपनिषद, दर्शन, ऋषि प्रणीत ग्रन्थ, जीवन परिचय, सम-सामयिक साहित्य सहित पूर्वजन्म के श्रृंगी ऋषि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी का सम्पूर्ण साहित्य एवं ओ३म ध्वज, पट्टिकाएं, फोटो, कैलेण्डर तथा कैसेट आदि बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।

व्यवस्थापक- आर्यावर्त प्रकाशन
गोकुल विहार, अमरोहा (उ०प्र०)-२४४२२१
फोन : 05922-262033 / 09412139333

बैंकाक में पुरोहित चाहिए

थाईलैण्ड की राजधानी स्थित आर्य समाज बैंकाक क लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि से शिक्षण प्राप्त पुरोहित महानुभाव, जो हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत भाषा पर समानाधिकार रखते हों तथा समस्त संस्कार सम्पन्न कराने की योग्यता रखते हों, वे अपना प्रार्थना पत्र विस्तृत बायोडाटा, योग्यता आदि प्रमाण पत्रों एवं पासपोर्ट की फोटोप्रति **'मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, १५- हनुमान रोड, नई दिल्ली- ११०००१'** के पते पर भेजें या aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें।

-विनय आर्य, उपमंत्री

'आर्य समाज के गौरव' ग्रंथ का प्रकाशन

ठाकुर विक्रम सिंह जी द्वारा 'आर्य समाज के गौरव' नाम से एक ऐतिहासिक ग्रन्थ, जो हर दृष्टि से संग्रहणीय, प्रशंसनीय तथा अवलोकनीय होगा, प्रकाशित किया जा रहा है। इस ग्रन्थ में ऐसे 100 व्यक्तित्व, जिन्होंने महर्षि दयानन्द के सिद्धांतानुसार जीवन का अनुसरण करते हुए आर्य समाज का गौरव बढ़ाया है, का जीवन चरित्र, कृतित्व, रंगीन फोटो सहित समाहित होगा। इनमें आर्य जगत के संन्यासी, महोपदेशक, भजनोपदेशक, विदुषी महिलाएं, राजनेता, शिक्षाविद्, लेखक, समाजसेवी, दानी एवं उद्योगपति आदि सम्मिलित होंगे, जिनकी आयु 40 वर्ष से ऊपर हो।

ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट, ए-41, लाजपतनगर II,
निकट- मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली- 24,
फोन : 011-45791152, 29842527, 9313254938

धर्म का स्वरूप

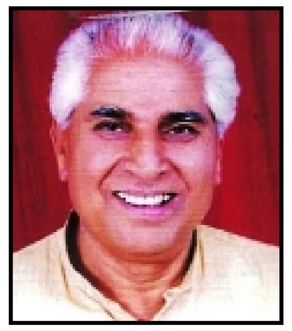

माया प्रकाश त्यागी

धर्म तो पक्षपातरहित न्यायाचरण, सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग, वेदोक्त ईश्वर की आज्ञा का पालन, परोपकार, सत्यभाषणादि- लक्षण सब मनुष्य मात्र का एक ही है। परन्तु धर्म की विशेष परिभाषा जो महर्षि मनु ने की, उसके अनुसार धर्म के दस लक्षण होते हैं, जो इस प्रकार हैं-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

अर्थ- पहला लक्षण (धृति) सदा धैर्य रखना, दूसरा (क्षमा) जो कि निन्दा-स्तुति मानापमान, हानिलाभ आदि दुखों में भी सहनशील रहना। तीसरा- (दम) मन को सदा धर्म में प्रवृत्त कर, अधर्म से रोक देना अर्थात् अधर्म करने की इच्छा भी न उठे। चौथा- (अस्तेय) चोरी त्याग अथात् बिना अनुमति अन्य के पदार्थ को प्राप्त करना व छल-कपट, विश्वासघात का व्यवहार रखना चोरी कहलाती है और उसको छोड़ देना ही अस्तेय अर्थात् चोरी त्याग कहलाता है। पांचवां- (शौच) राग-द्वेष पक्षपात छोड़ के भीतर की पवित्रता और जल आदि से बाहर शरीर की पवित्रता रखनी। छठा- (इन्द्रिय निग्रह) अधर्माचरण से रोक के इन्द्रियों को धर्म में ही सदा चलाना। सातवां- (धीः) बुद्धिनाशक मादक द्रव्यों का सेवन, दुष्टों का संग, आलस्य-प्रमाद आदि को छोड़ के श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन, सत्पुरुषों का संग, योगाभ्यास, ब्रह्मचर्य आदि शुभ कर्मों से बुद्धि को बढ़ाना। आठवां- (विद्या) पृथ्वी से लेके परमेश्वर पर्यन्त यथार्थ ज्ञान और उनसे यथायोग्य उपकार लेना, सत्य जैसा आत्मा में वैसा मन में, जैसा मन में वैसा वाणी में, जैसा वाणी में वैसा कर्म में वर्तना। यह विद्या है और इससे विपरीत अविद्या कहाती है। नवमा- (सत्य) जो पदार्थ जैसा हो, उसको वैसा ही समझना, वैसा ही बोलना और वैसा ही करना भी सत्य कहलाता है। दशवां- (अक्रोध) क्रोधादि दोषों को छोड़ शान्ति आदि गुणों को ग्रहण करना धर्म का दशवां लक्षण है।

उपरोक्त धर्म के दस लक्षणों में से पांच लक्षण- धृति, क्षमा, दम, इन्द्रिय निग्रह, अक्रोध सहनशीलता के द्योतक हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि सहनशीलता वाला व्यक्ति ही धर्मात्मा कहला सकता है।

वैदिक दर्शन में ईश्वर-प्रार्थना में परमेश्वर से तेज, वीरता, बल, ओज, मन्यु के साथ सहनशक्ति की विशेष प्रार्थना की जाती है। मंत्र इस प्रकार है-

ओ३म् तेजाऽसि तेजो मयि धेहि स्वाहा।
ओ३म् बलमसि बलं मयि धेहि स्वाहा।
ओ३म् मन्युरसि मन्यु मयि धेहि स्वाहा।
ओ३म् वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि स्वाहा।
ओ३म् ओजोऽस्योजो मयि धेहि स्वाहा।
ओ३म् सहोऽसि सहो मयि धेहि स्वाहा।

आर्य समाज के संस्थापक ऋषिवर देव दयानन्द के जीवन में सहनशीलता के अद्‌भुत उद्धरण मिलते हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं- सत्य के प्रचार, अंधविश्वास व कुरीतियों के उन्मूलन के लिए ऋषि द्वारा संचालित आन्दोलन से रुष्ट हुए स्वार्थी तत्वों द्वारा किये गये अपमान को ऋषि ने सहन ही नहीं किया, बल्कि उनके लिए सद्‌बुद्धि की प्रार्थना भी ईश्वर से की, तथा आयोजन के उपरांत उन्हें प्रसाद (मिठाई) तक प्रदान की। जीवन में गालियां, पत्थरों के आघात तक उन्होंने सहन किये। विष पिलाने वाले जगन्नाथ नाम के व्यक्ति को मार्ग-व्यय का धन देकर दूर भाग जाने का अवसर प्रदान किया।

संसार में विभिन्न महान पुरुषों व धर्मगुरुओं का अपमान यहां होता रहा है। पैगम्बर हजरत मौहम्मद साहब, ईसा मसीह, राम, कृष्ण के साथ भी समकालीन लोगों द्वारा किया गया अपमानजनक व्यवहार किसी से छुपा नहीं हैं। परन्तु महान पुरुषों ने उस अपमान की परवाह किए बिना संसार को राह दिखाई है और सहनशीलता के उदाहरण प्रस्तुत किये हैं।

महर्षि पतंजलि ने योग दर्शन में भी तप का अर्थ द्वन्द्वसहन किया है। अर्थात् विपरीत परिस्थितियों में कष्ट सहने के उपरांत ही व्यक्तित्व में निखार आता है। जैसे आग की भट्ठी में तपने के बाद ही स्वर्ण का मैल दूर होता है और वह कुन्दन बनकर चमक उठता है।

योगेश्वर श्री कृष्ण की गीता का यह संदेश कि 'समत्वं योग उच्यते' समझने के योग्य है। सुख-दुख, लाभ-हानि, मान-अपमान, यश-अपयश की परिस्थितियों में सम रहना अर्थात् मानसिक संतुलन को बनाए रखने का नाम ही योग है। इससे भी यही सिद्ध होता है कि जो सहनशक्ति को जितना बढ़ाएगा, वह उतना ही सिद्धयोगी कहलाएगा।

साम्प्रदायिक सद्‌भाव हेतु सहनशक्ति का होना अनिवार्य होता है। इस सद्‌भाव को बनाने के लिए सभी धर्माचार्यों को एकत्र कर न्यूनतम साझा कार्यक्रम चलाने का प्रयास स्वामी दयानन्द ने किया था, जिससे प्रभावित होकर दूसरे सम्प्रदायों के महान पुरुष सर सैयद अहमद खाँ, पादरी एल्काट तथा एडवर्ड कलेक्टर जैसे धर्मगुरु उनके व्याख्यानों में सम्मिलित हुआ करते थे। मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघरों तक में स्वामी दयानन्द के उपदेश होते थे। दिल्ली की जामा मस्जिद की प्राचीर से दिया गया स्वामी श्रद्धानन्द का प्रवचन ऐतिहासिक दस्तावेज है।

राष्ट्रीय उद्‌बोधन सत्यार्थ प्रकाश के इस वाक्य कि ''कोई कितना भी करे, माता-पिता के समान सुखदाई राज्य भी हमें मान्य नहीं, क्योंकि जो स्वदेशी राज्य होता है, वही सर्वोपरि उत्तम होता है'' ने सभी हिन्दु-मुस्लिम आदि को उद्वेलित किया और सभी ने मिलकर स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया। कांग्रेस के इतिहास में पट्टाभिसीता रमैया ने लिखा है कि ''आजादी के आन्दोलन में भाग लेने वालों में 85 प्रतिशत लोग स्वामी दयानन्द से प्रेरित थे।''

उपरोक्त सभी तथ्यों के आधार पर कहने में मुझे संकोच नहीं है कि पारस्परिक सद्‌भाव के बिना कोई सामाजिक कार्य संभव नहीं है। और यह सद्‌भाव मान-अपमान की उपेक्षा कर, सहनशक्ति का विकास करके ही किया जा सकता है।

(कोषाध्यक्ष- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा), त्यागी भवन
आर-९/२४२, राजनगर
गाजियाबाद- २०१००२
मोबा. : 09873540508

युग परिवर्तन कार्य-आर्यों जागो

डॉ० आनन्द सुमन सिंह

सकल विश्व आज संकटों से घिरा है। मानव समाज का प्रत्येक सदस्य स्वयं को असुरक्षित समझता है। भौतिकवाद का नशा, पश्चिमी सभ्यता का अन्धकार, तिस पर परमाणु बम व अणु बम का भय! मानव मानव का दुश्मन बनता जा रहा है। कारण हम स्वार्थी होते जा रहे हैं, स्वार्थ की सीमा को लांघ कर हम परमेश्वर तक से भय नहीं रखते, मात्र अर्थ प्राप्ति में लगे, हम दिन रात एक मशीन की तरह कार्य कर रहे हैं किन्तु क्या प्राप्त होता है, हम भ्रष्टाचार, अन्याय के बल पर अर्थ प्राप्त कर तो लेते हैं, किन्तु वह अर्थ जो अनुचित रूप से आया, वह अनुचित कार्यों में ही व्यय भी होता है। हम मदिरा पान, मांस भक्षण के कार्यों को करते तो हैं किन्तु उसके दुष्परिणाम क्या होंगे, क्या कभी किसी ने विचारा है। वर्तमान परिस्थितियों में कुल मिलाकर यही कहा जा कसता है कि विश्व में मानवता नाम की कोई वस्तु नहीं रही मात्र स्वार्थ है। तेरा मेरा वह वाद है! मानव से दानव बनने की प्रथा है, किन्तु क्या यह रूप विश्व के लिये उचित होगा! गत् वर्ष हमने एक महान योगी महर्षि दयानन्द की बलिदानी शताब्दी दीप मल्लिका की पवित्र ज्योति में मनाई। महर्षि दयानन्द के चिन्तन मनन का प्रत्येक क्षण विश्व कल्याण व मानव एकता कैसे लाऐं यही योजना बनाते बीता। किन्तु क्या हम उनके पवित्र विचारों को समझ सके महर्षि दयानन्द के सैनिक आर्यों को आज जागृत होना आवश्यक है। कारण इस विश्व का नीड़ डगमगा रहा है-स्वार्थ, पश्चिमी सभ्यता, भौतिकवाद का नशा मानव समाज को दानवता की अन्धकार मयी गुफा में ले जा रहा है, यह एक कटु सत्य है कि विश्व में अनेकों सम्प्रदाय हैं। अनेकों धर्म ग्रन्थों के सन्देश भी हैं। किन्तु कोई भी सम्प्रदाय या मजहब विश्व में शान्ति पूर्वक मानवता व प्राणी कल्याण को धारण करने का सन्देश देने में असमर्थ है, कारण प्रत्येक धर्म गुरु ने अपने ग्रन्थों में मात्र एक समुदाय के सम्बन्ध में ही निर्णय दिये हैं किन्तु सत्य सनातन वैदिक धर्म जिस प्रकार सृष्टि की उत्पत्ति से सकल मानव समाज को सत्य व मानवता का मार्ग दर्शन कराता आ रहा है, उसी प्रकार अपने सत्य स्वरूप में आज भी मानव को सत्य पथ दर्शाने हेतु तत्पर है। किन्तु हमारे तथाकथित जन्माधिकार वाद वाले व्यवसायी ब्राह्मण समाज ने तो वेद पर अंकुश ही लगा दिया था कि वेद आदि शास्त्रों को पढ़ने का अधिकार मात्र ब्राह्मण व उनके परिवार में जन्म लेने वालों को ही है, किन्तु सौ वर्ष पूर्व मानवता के रक्षक, वेदोद्वारक, राष्ट्र निर्माता-स्वतन्त्रता आन्दोलन के सूत्राधार महर्षि दयानन्द ने देवों के सत्य स्वरूप को हमारे सम्मुख रखा और विश्व के मानवों को सत्य सनातन, प्राणी मात्र के कल्याण कारक वैदिक धर्म का पवित्र सन्देश सुनाया-किन्तु उस समय महर्षि दयानन्द के विचारों को बहुत कम लोग समझ पाये, जो समझे वह आज भी अपने जीवन को अन्धकार असत्य, पाखण्ड से दूर रख कर-वैदिक नियमानुसार चला रहे हैं, आज युग परिवर्तन चाहता है। युग को बदलने का कार्य मात्र आर्य समाज ही कर सकता है। अत: विश्व के प्रत्येक मानव को अन्धकार से हटाकर पुन: न्याय के पवित्र वैदिक पथ पर लाने का महान कार्य आर्यों को करना है, परिस्थितियाँ गम्भीर हैं, विश्व संकट में है, ऐसे समय में आर्य जागृत ही महर्षि के पवित्र वैदिक-पुन्ज को लेकर सकल विश्व के प्राणियों को सत्य का सन्देश सुनाऐं, जो मानव दानवता के पथ पर जा चुके हैं, उन्हें पुन: मानवता के पथ पर लाऐं, आज मानवता चित्कार कर रही है-

है! आर्यो जागो उसकी पुकार सुनों उसे अणु बम, परमाणु बम के भय से बचाओ, पश्चिमी सभ्यता के भौतिकता वादी, अन्धकार मय वातावरण को समाप्त कर वेद की ज्योति को प्रज्जवलित करो, तभी तो मानवता का उदय होगा। आशा है आर्य युवक जागृत होकर विश्व के नव निर्माण में, युग के परिवर्तन में विशेष भूमिका निभाकर महर्षि दयानन्द की पवित्र ज्योति को सदा-सदा के लिये अमर अजर कर देंगे-इस महान परिवर्तन के निमित्त विश्व का प्रत्येक प्राणी आर्य युवकों व आर्य समाज का सदा-सदा ऋणी रहेगा। परमेश्वर हमें शक्ति दे कि सकल विश्व में वेद की ज्योति को ज्योतित कर ऊँ के भगवा ध्वज को फहरा कर सकल विश्व में चक्रवर्ती सार्वभौम वैदिक साम्राज्य की स्थापना करें।

देहरादून (उत्तराखण्ड)

आर्यावर्त केसरी में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

आर्यावर्त केसरी वर्तमान में देशभर के कोने-कोने के साथ ही विश्व के अनेक देशों में प्रसारित हो रहा है। इस पत्र के देशभर में हजारों पाठक हैं। सभी शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों से अनुरोध है कि वे अपनी शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों के विज्ञापन आर्यावर्त केसरी में देकर लाभ उठायें।

विज्ञापन शुल्क इस प्रकार है-
पूरा पृष्ठ रंगीन, एक अंक का शुल्क 10000/- रुपये
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/2 पृष्ठ का शुल्क- 5500/-
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/4 पृष्ठ का शुल्क- 3000/-
स्थाई अथवा एक बार से अधिक प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों पर विशेष छूट देय है।

-प्रबन्धक (विज्ञापन), मोबा. : 8630822099

मॉरीशस में १८ से होगा विश्व हिन्दी सम्मेलन

नई दिल्ली। आगामी विश्व हिन्दी सम्मेलन मॉरीशस में होगा। यह जानकारी देते हुए विदेशमंत्री सुषमा स्वराज ने 11वे विश्व हिन्दी सम्मेलन का 'लोगो' जारी किया, जिसका आयोजन 18 से 20 अगस्त तक मॉरीशस में होगा।

स्वराज ने इस अवसर पर कहा कि भारत और मॉरीशस के बीच प्रगाढ़ रिश्ते हैं और वैश्विक पटल पर हिन्दी को आगे बढ़ाने में मॉरीशस का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व वर्ष 1976 और 1993 में भी मौरीशस में दो भव्य विश्व हिन्दी सम्मेलन हो चुके हैं। इस विश्व सम्मेलन की घोषणा भारत में भोपाल में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन में की गयी थी। अब इस बार तीसरी बार इसका आयोजन मौरीशस में कया जाएगा। विदेशमंत्री ने कहा है कि इस सम्मेलन के आयोजन के लिए स्वामी विवेकानन्द अंतरराष्ट्रीय संस्थान को सभाकेन्द्र के रूप में चुना गया है। सम्मेलन का मुख्य विषय 'वैश्विक हिन्दी और भारतीय संस्कृति' है। इसी के आधार पर अन्य विषय भी सम्मेलन में लिये जाएंगे।

श्रीमती स्वराज ने बताया कि 11वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के दौरान एक विषय 'भोपाल से मॉरीशस' रखा गया है। उन्होंने हिन्दी सेवियों से भारी संख्या में पहुंचने की अपील की है।

बरनाला में आर्य महासम्मेलन

प्रेम भारद्वाज
बरनाला।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि0), गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन 11 नवम्बर 2018 को बरनाला में आयोजित किया जा रहा है। सभा ने अपील की है कि पंजाब की समस्त आर्यसमाजें इन तिथियों में अपने-अपने आर्य समाज का अन्य कोई भी कार्यक्रम न रखें और इस आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए पूरी शक्ति से जुट जाएं।

सभा की विज्ञप्ति में कहा गया है कि इससे पूर्व 17 फरवरी 2017 को लुधियाना और 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सफल आर्य महासम्मेलनों का आयोजन कर चुकी है। इसी कड़ी में यह कार्यक्रम भी है।

अमेरिका में होगा आर्य महासम्मेलन

अटलांटा (अमेरिका)। अमेरिका की आर्य प्रतिनिधि सभा, द्वारा 'अटलांटा' में 19 से 22 जुलाई तक आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया जा रहा है। जो महानुभाव इसमें भाग लेना चाहते हैं, उनके लिए दिल्ली से 18 जुलाई से 1 अगस्त तक यात्रा का कार्यक्रम बनाया गया है।

आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा द्वारा स्थापित

सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि के सहयोगी महानुभाव

विशेष : न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' तथा आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित किये जाएंगे

घर-घर पहुंचाएं सत्यार्थ प्रकाश

धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं है, यदि आप चाहें तो यह राशि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी हमें भेज सकते हैं। आपकी घोषित धनराशि के अनुरूप उतनी ही प्रतियों में आपके चित्र व नाम प्रकाशित किये जाएंगे। धन्यवाद

आर्यावर्त केसरी के सदस्यों से विनम्र अनुरोध

आर्यावर्त केसरी के सभी सम्मानित सदस्यों से अनुरोध है कि उनकी वार्षिक सदस्यता अवधि नाम व पते की स्लिप पर अंकित रहती है। अतः स्लिप पर अंकित अवधि के अनुसार यथासमय अपना वार्षिक सदस्यता सहयोग भेजते रहा करें। जिन मान्य सदस्यों ने अभी तक अपनी वार्षिक सदस्यता-राशि जमा नहीं की है, वे कृपया मनीआर्डर द्वारा आर्यावर्त केसरी के पते पर भेजकर रसीद प्राप्त कर लें, ताकि उन्हें आर्यावर्त केसरी निरंतर मिलता रहे।

प्रबन्धक (प्रसार)– आर्यावर्त केसरी

आगामी कार्यक्रम

१६ जुलाई २०१८–
स्वस्ति यज्ञ ब्रह्मा आचार्य अरविन्द शास्त्री, आयोजक– श्री प्रेम वीर, जलालाबाद, गाजियाबाद।

२० से २२ जुलाई २०१८–
आर्य समाज, शिवपुरी द्वारा वैदिक अतिथि यज्ञ का आयोजन ब्रह्मा डॉ0 सोमदेव शास्त्री, मुम्बई।
सम्पर्क– इन्द्र प्रकाश गांधी, प्रधान, समीर गांधी, मोबा. : 9425137067

१ अगस्त २०१८–
आर्यावर्त केसरी प्रबंध समिति द्वारा शहीद कपिल यादव की शहादत पर मालीपुरा (अमरोहा) में राष्ट्र कल्याण यज्ञ एवं श्रद्धांजलि समारोह।

८ से १२ अगस्त–
आर्य समाज, लारसोठ, गंगापुर सिटी (राज0) का वार्षिकोत्सव। आमंत्रित विद्वान– शिवकुमार शास्त्री (सहारनपुर), प्रदीप शर्मा भजनोपदेशक, संरक्षक– पं0 मदन मोहन।

१२ से २२ अगस्त–
नवां चतुर्वेद पारायण यज्ञ, श्री देवतीर्थ गंगा गुरुकुल के आचार्य विकास तिवारी के ब्रह्मत्व में लाल मंदिर, आश्रम ब्रजघाट, जिला हापुड़ में सम्पन्न होगा।

१६ से १८ नवम्बर २०१८–
परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर में भव्य ऋषि मेले का आयोजन।

॥ ओ३म् ॥
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
(सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाओ)

प्रोफेसर महावीर जी के जन्मदिवस पर अभिनन्दन ग्रन्थ का भव्य प्रकाशन

सामग्री प्रेषण का अनुरोध

मान्यवर,

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि वैदिक वांगमय के उद्भट् विद्वान, संस्कृत साहित्य के पुरोधा, गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के प्रबल परिपोषक, गुरुकुल झज्जर एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के यशस्वी स्नातक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, संकायाध्यक्ष, कुलसचिव एवं कुलपति जैसे पदों को विभूषित करने वाले तथा उत्तराखण्ड संस्कृति अकादमी के संस्थापक सदस्य व उपाध्यक्ष एवं उत्तराराखण्ड संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति जैसे पदों पर आसीन रहने वाले तथा देश-विदेश में आयोजित सैंकड़ों राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय शोध सम्मेलनों में मुख्य अतिथि तथा अध्यक्ष आदि के रूप में शोभा बढ़ाने वाले एवं इंग्लैण्ड, अमेरिका, नेपाल और थाईलैण्ड आदि देशों में भी संस्कृत की पताका फहराने वाले आचार्य डॉ. महावीर जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर उनके जन्मदिवस 09 अक्टूबर 2018 को एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने का निश्चय किया गया है।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि कृपया निम्न बिन्दुओं पर अपनी रचनाएं भेजने की कृपा करें–

1. प्रो. महावीर के साथ व्यतीत किये गये क्षणों की मधुर स्मृतियां संस्मरण आदि।
2. पूर्व कुलपति डॉ. महावीर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आलेख।
3. संस्कृत साहित्य से सम्बद्ध किसी भी पक्ष पर विद्वत्तापूर्ण शोध पत्र/कविता/लघुलेख आदि।
4. यदि आपके पास डॉ. महावीर जी के साथ व्यतीत क्षणों को स्मरण कराने वाला फोटो हो तो वह अवश्य भिजवायें।

कृपया उपर्युक्त में से कोई भी सामग्री अविलम्ब डॉ. विनोद चन्द विद्यालंकार के पते पर पंजीकृत डाक व कोरियर से भेजने का कष्ट करें।

निवेदक

डॉ. रजत अग्रवाल
प्रबन्धन संकाय,
आई.आई.टी. रुड़की
मोबा. : 9719004491

डॉ. विनोद चन्द्र विद्यालंकार
217, आर्य वानप्रस्थ आश्रम,
ज्वालापुर-249407, हरिद्वार
मोबा. : 9897509561

E-mail : mahavir_gkv@yahoo.co.in
dr.ragat07@gmail.com

आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित 'आर्यावर्त केसरी' के बचत खाता संख्या- 30404724002 (IFSC कोड : SBIN0000610) में जमा करा सकते हैं, अथवा चैक या धनादेश द्वारा भेज सकते हैं। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), दूर. -05922-262033, चल.- 08273236003, 09412139333

आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

आर्यावर्त केसरी
संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', (मोबाा : 9456274350)
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार, डॉ. ब्रजेश चौहान, अमित कुमार
मुद्रण- इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033, 9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawartkesari@gmail.com